साईं सृजन पटल

Website : www.sainsrijanpatal.com

MSME Registration No.
UDYAM-UK-05-0103926

मासिक ई-पत्रिका

लेखन और सृजन के उन्नयन के लिए सदैव प्रतिबद्ध

वर्ष-3 | अंक-20 | मार्च - 2026 | पृष्ठ-28 | निःशुल्क

Prof. Shailendra Handu
M.B.B.S, M.D & D.M (Clinical Pharmacology)
Dean (Research)
Professor & Head, Dept. of Pharmacology
All India Institute of Medical Sciences (A.I.I.M.S.)
Rishikesh, India - 249203

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत हर्ष एवं संतोष की अनुभूति हो रही है कि "साईं सृजन पटल" पत्रिका साहित्य, संस्कृति, स्वास्थ्य एवं समाज के विविध आयामों को अभिव्यक्त करने का एक सशक्त एवं प्रभावी मंच बनकर निरंतर आगे बढ़ रही है। नि:संदेह, ऐसी पत्रिकाएं समाज में रचनात्मक चिंतन, सकारात्मक दृष्टिकोण तथा सांस्कृतिक मूल्यों के संरक्षण एवं संवर्धन में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

साहित्य को समाज का दर्पण कहा गया है। यह न केवल हमारे विचारों और संवेदनाओं को सशक्त अभिव्यक्ति प्रदान करता है, बल्कि नई पीढ़ी को प्रेरणा, दिशा और श्रेष्ठ संस्कारों से भी समृद्ध करता है। "साईं सृजन पटल" के माध्यम से विविध रचनाकारों को अपनी प्रतिभा प्रस्तुत करने का जो अवसर प्राप्त हो रहा है, वह वास्तव में एक सराहनीय एवं अनुकरणीय पहल है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका भविष्य में भी साहित्यिक चेतना को समृद्ध करते हुए समाज में सकारात्मक परिवर्तन तथा रचनात्मक संवाद को निरंतर गति प्रदान करती रहेगी। मैं पत्रिका से जुड़े सभी संपादकों, लेखकों एवं सहयोगियों को हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ तथा इसके उज्ज्वल भविष्य की मंगलकामना करता हूँ।

सादर,

शैलेन्द्र शंकर हांडू

आचार्य (डॉ).शैलेन्द्र शंकर हांडू
विभागाध्यक्ष, औषधि विज्ञान विभाग
एवं संकायाध्यक्ष (अनुसंधान)
अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स),ऋषिकेश

संपादकीय

साईं सृजन पटल के 20वें अंक का प्रकाशन हमारे लिए बहुत मायने रखता है। यह हमारे संकल्प का एक महत्वपूर्ण पड़ाव भी है। इस अंक में धार्मिक आस्था से जुड़े लेखों - उमरा नारायण मंदिर व बालेश्वर महादेव मंदिर की जानकारी पाठकों तक पहुंचाई गई है। अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के इस माह में ज्योति जोशी की ऐपण कला, डॉ.प्रभा बिष्ट की हाउसकीपिंग पुस्तक, भारती तिवारी का दिव्य कला मेला पर लेख, आशा रणाकोटी का पुरानी टिहरी की स्मृतियों पर लेख तथा डॉ. विनीता चौधरी व स्वाति भंडारी के लेखों को इस अंक में स्थान दिया गया है। डॉ.पुष्पा खंडूरी को मिले 'स्त्री शक्तिसम्मान-2026' से भी परिचित करवाया गया है। पर्यटन की दिशा में 'बजरंग सेतु' और नवाचार के क्षेत्र में 'प्रज्ञानम्' पर भी सामग्री समाहित है। छात्रों के लिए प्रेरणास्रोत बने भगवान सिंह धामी की सफलता की कहानी उप संपादक अंकित तिवारी की कलम से पाठकों तक पहुंचाई गई है। डॉ.इन्द्रेश कुमार पांडेय का 'पंय्यां' पर लेख नई जानकारी देने वाला है। जन औषधि के लिए एम्स को मिला 'राष्ट्रीय सम्मान' एक उपलब्धि है। देहरादून में आयोजित विशाल रक्तदान शिविर मानवता की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। एम्स ऋषिकेश के प्रो० शैलेन्द्र शंकर हांडू जी के शुभकामना संदेश से पत्रिका के समस्त हितधारकों का उत्साहवर्धन हुआ है।

प्रो. (डॉ.) के. एल. तलवाड़

साईं सृजन पटल
मासिक ई-पत्रिका

संपादक/स्वामी/प्रकाशक
प्रो.के.एल.तलवाड़
(सेवानिवृत्त प्राचार्य)
मो.- 9412142822
ई-मेल: sainsrijanpatal@gmail.com
वेबसाईट - sainsrijanpatal.com

उप संपादक
अंकित तिवारी
एम.ए., एल.एल.बी.
मो. 7678117638

सह संपादक
अमन तलवाड़
मो. 7300883189
द्वारा ईजी ग्राफिक्स,
दया पैलेस, हरिद्वार रोड,देहरादून (उत्तराखंड)
से मुद्रित करवाकर 'साईं कुटीर'
आर.के.पुरम, जोगीवाला, देहरादून
(उत्तराखंड) से प्रकाशित

सलाहकार मंडल
डॉ.एस.डी. जोशी, वरिष्ठ फिजिशियन
प्रो. जानकी पंवार (सेवानिवृत्त प्राचार्य)
प्रो. राजेश कुमार उभान (सेवानिवृत्त प्राचार्य)
डॉ० अनूप वीरेन्द्र कठैत (लेखक/अभिनेता)
डॉ. चन्द्रभूषण बिजल्वाण साहित्यकार

आवरण पृष्ठ
दिव्य कला मेला - प्रतीक चिन्ह, ज्योति जोशी द्वारा ऐपण रचना व आकर्षक कलाकृति, पुरानी टिहरी की स्मृति-राजा के महल का नक्काशीदार द्वार, उत्तराखंडी अभिनेत्री शिवानी भंडारी एवं लोकभवन के वसंतोत्सव में पुष्प प्रदर्शनी

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में तथ्यों संबंधी विचार लेखकों के निजी हैं, जिनसे प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

भगवान विष्णु को समर्पित
उमरा नारायण मंदिर

उत्तराखंड के रुद्रप्रयाग में अलकनंदा नदी के किनारे स्थित उमरा नारायण मंदिर भगवान विष्णु को समर्पित एक प्राचीन और पवित्र स्थान है। मान्यता है कि इस मंदिर का निर्माण 8वीं शताब्दी मे आदिशंकराचार्य ने बद्रीनाथ यात्रा के दौरान किया था। यह मंदिर स्थानीय ग्राम सन्न के गैरोला जाति के लोगो का एवं क्यार्क ,शौड, खुरड, गाँवों वालों का इष्ट देवता (कुल देवता) है। मान्यताओं के अनुसार, आदिशंकराचार्य ने जब केदारनाथ और बद्रीनाथ की यात्रा की थी, तब उन्होंने इस मंदिर की स्थापना की थी।

भगवान उमरा नारायण मंदिर उत्तराखंड के रुद्रप्रयाग मुख्य शहर से 5 किलोमीटर की दूरी पर है और प्रसिद्ध कोटेश्वर महादेव मंदिर के निकट है। भगवान उमरा नारायण मंदिर को भगवान विष्णु का पवित्र निवास माना जाता है। मंदिर अलकनंदा नदी के निकट स्थित है। स्थानीय परम्परा के अनुसार स्थानीय निवासियों द्वारा हर फसल के बाद फसल का पहला अनाज इष्टदेव के पवित्र चरणों में चढ़ाया जाता है, जिसे उमरा नारायण भगवान का आशीर्वाद और समृद्धि का समर्थन माना जाता है।

पूर्व में यहां पूजा के लिए गैरोला पंडित नियुक्त थे और वर्तमान में महंत सरजू दास जी की देखरेख में यहाँ पूजा–पाठ की जाती है। इस मंदिर का भव्य व अद्भुत निर्माण और शैली यहां आने वाले श्रद्धालुओं को मंदिर में आने के लिए बार–बार बार आकर्षित करती है। रुद्रप्रयाग जिला मुख्यालय से कोटेश्वर चोपड़ा मोटर मार्ग पर पाँच किलोमीटर की दूरी पर स्थित होने के बावजूद भी अभी तक यह मंदिर अधिकांश श्रद्धालुओं के लिए अनजान ही है। भगवान विष्णु के प्रति अटूट आस्था विश्वास रखने वाले श्रद्धालुओं के लिए अध्यात्मिक शान्ति के लिए यह मनोरम तीर्थ है। यहां आकर श्रद्धालु शान्ति का अनुभव करते है। मंदिर अपनी शांत और प्राकृतिक सुंदरता के लिए प्रसिद्ध है। जहां एक ओर अलकनंदा नदी की ध्वनि भक्तों को आध्यात्मिक शांति प्रदान करती है तो वहीं दूसरी ओर मंदिर में आकर श्रद्धालुओं को अलौकिक शक्ति का आभास भी होता है। मंदिर में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर रात्रि जागरण होता है, जिसमे स्थानीय श्रद्धालुओं भजन–कीर्तन करते हैं। यहां स्थानीय श्रद्धालु प्रत्येक दिन दर्शन के लिए आते हैं। यह मंदिर स्थानीय संस्कृति और धार्मिक मान्यताओं का एक महत्वपूर्ण केन्द्र है।

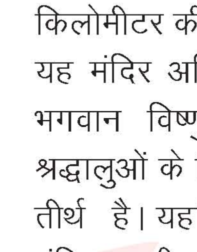

प्रस्तुतिः
डॉ. रमेश चन्द्र भट्ट विभागाध्यक्ष भूगोल,
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
कर्णप्रयाग

लोककला ऐपण से आत्मनिर्भरता की ओर ज्योति जोशी की प्रेरक यात्रा

उत्तराखंड की पहचान उसकी समृद्ध लोकसंस्कृति और परंपराओं से है। इन्हीं परंपराओं में से एक है कुमाऊँ अंचल की विशिष्ट लोककला ऐपण, जो कभी केवल घरों की देहरी और पूजा स्थलों तक सीमित थी। आज यह कला आत्मनिर्भरता, स्वरोजगार और महिला सशक्तिकरण का सशक्त माध्यम बन रही है। इस परिवर्तन की जीवंत मिसाल हैं अल्मोड़ा जनपद की निवासी और वर्तमान में देहरादून में रह रहीं ज्योति जोशी।

18 अगस्त 1986 को जन्मी ज्योति जोशी ने अपनी प्रारंभिक शिक्षा पिथौरागढ़ से पूर्ण की तथा समाजशास्त्र में स्नातकोत्तर की शिक्षा कुमाऊं विश्वविद्यालय से प्राप्त की। इसके साथ ही उन्होंने बी.एस. नेगी महिला पॉलिटेक्निक, कौलागढ़, देहरादून से फैशन डिजाइनिंग में तीन वर्षीय डिप्लोमा किया। बचपन से ही दादी और माँ को घरों में ऐपण बनाते देखने से इस लोककला के प्रति उनका विशेष लगाव विकसित हुआ।

कोविड के बाद बीते छह–सात वर्षों से ज्योति जोशी ने लोककला ऐपण को संरक्षित करने और उसे स्वरोजगार से जोड़ने का संकल्प लिया। छोटे स्तर पर घर से शुरू किया गया यह प्रयास आज एक सशक्त पहचान बन चुका है। उन्होंने ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाओं, स्कूलों, महाविद्यालयों के छात्र–छात्राओं को ऐपण कला का प्रशिक्षण देकर न केवल इस परंपरा को आगे बढ़ाया, बल्कि अनेक परिवारों के लिए आय का नया स्रोत भी तैयार किया।

ज्योति जोशी द्वारा तैयार किए गए ऐपण आधारित उत्पाद–रक्षाबंधन की राखियां, करवाचौथ पूजा सेट, ऐपण पेंटिंग्स, साड़ियां, स्टॉल, की–चेन, कार हैंगिंग, केतली, बैग, टोपी, तोरण, डायरी और ज्वेलरी–प्रदर्शनियों में देश–विदेश से आए लोगों द्वारा खूब सराहे गए। राजभवन देहरादून के पुष्प महोत्सव, विरासत महोत्सव सहित विभिन्न आयोजनों में उनके कार्यों ने विशेष पहचान बनाई। सरकारी स्तर पर भी उनके प्रयासों को सराहा गया। विधानसभा अध्यक्ष श्रीमती ऋतु खंडूरी से मुलाकात के पश्चात उन्होंने विधानसभा भवन रिस्पना में ऐपण से गोल गुंबद तैयार किया तथा भराड़ीसैंण

विधानसभा भवन में ऐपण से बनी पेंटिंग्स और रम्माण मुखौटा चित्रण स्थापित किए गए। इसके अतिरिक्त राष्ट्रपति निकेतन, देहरादून में ऐपण पेंटिंग्स का उद्घाटन राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू द्वारा किया जाना उनके कार्य की राष्ट्रीय स्वीकृति का प्रमाण है।

ज्योति जोशी ने डायट देहरादून एवं बड़कोट में विभिन्न जनपदों से आए शिक्षकों के लिए ऐपण कार्यशालाएँ आयोजित कीं, जिसके बाद शिक्षकों ने अपने–अपने विद्यालयों में विद्यार्थियों को यह लोककला सिखाकर विद्यालय परिसरों को ऐपण से सजाया। महिला सशक्तिकरण की दिशा में उनका कार्य अत्यंत प्रेरणादायक है। वे सुद्धोवाला जेल में बंद महिला कैदियों को निःशुल्क ऐपण प्रशिक्षण देकर आत्मनिर्भर बना रही हैं। इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से महिलाएं थाली, टोपी, ज्वेलरी, साड़ी, बास्केट, राखी आदि बनाना सीख रही हैं, ताकि जेल से बाहर आने के बाद सम्मानजनक जीवन जी सकें और लोककला को आगे बढ़ा सकें।

ज्योति जोशी अपने उत्पादों को 'गुड़िया आर्ट प्रोडक्ट'नाम से पहचान देती हैं, जिसे वे वेबसाइट और इंस्टाग्राम के माध्यम से लोगों तक पहुँचाती हैं। वे टेलर के पास बचे कटे कपड़ों का उपयोग कर पर्यावरण–संवेदनशील उत्पाद तैयार करती हैं, जिससे रिसायक्लिंग और सतत विकास को भी बढ़ावा मिलता है। घर से शुरू हुए इस सफर में ज्योति जोशी के साथ एक मजबूत संबल भी हमेशा खड़ा रहा। ज्योति बताती हैं कि उनकी इस पूरी यात्रा में उनके पति सुधीर जोशी का सहयोग हर कदम पर मिला। वे न केवल उनके कार्यों में सहभागी बने, बल्कि हर निर्णय में मार्गदर्शन भी करते रहे। ज्योति के अनुसार, जब भी चुनौतियाँ सामने आईं–चाहे आर्थिक हों, सामाजिक हों या मानसिक,उनके पति ने उन्हें आगे बढ़ने का आत्मविश्वास दिया। वे मानती हैं कि "यदि परिवार का साथ न हो, तो किसी भी महिला का आगे बढ़ना कठिन हो जाता है। मेरे लिए मेरे पति का सहयोग मेरी सबसे बड़ी ताकत रहा है।"

ज्योति का मानना है कि हमारी संस्कृति ही हमारी असली पहचान है। वे युवा पीढ़ी से आह्वान करती हैं कि वे अपनी विरासत से जुड़ें, उसका सम्मान करें और आने वाली पीढ़ियों तक उसे पहुँचाएं। कला के माध्यम से संस्कृति को आगे बढ़ाने के साथ–साथ वे भाषा के संरक्षण हेतु आकाशवाणी देहरादून से जुड़कर भी कार्य कर रही हैं। निस्संदेह, ज्योति जोशी की यह यात्रा सिद्ध करती है कि लोककला केवल अतीत की धरोहर नहीं, बल्कि वर्तमान और भविष्य की आत्मनिर्भरता का सशक्त आधार भी बन सकती है।

प्रस्तुति : अंकित तिवारी, उपसंपादक

डॉ. प्रभा बिष्ट की हाउसकीपिंग कौशल विकास पुस्तिका कौशल आधारित शिक्षा का सशक्त दस्तावेज

वर्तमान समय में जब शिक्षा का उद्देश्य केवल डिग्री प्राप्त करना न होकर रोजगार, कौशल और आत्मनिर्भरता से जुड़ गया है, ऐसे में हाउसकीपिंग जैसे व्यावहारिक विषयों की प्रासंगिकता और भी बढ़ जाती है। मानव सभ्यता के आरंभ से ही गृह अनुरक्षण (हाउसकीपिंग) जीवन का अभिन्न अंग रहा है। इसी मूल भावना को आधुनिक शैक्षिक एवं व्यावसायिक आवश्यकताओं से जोड़ते हुए डा० प्रभा बिष्ट की नवीनतम कृति "हाउसकीपिंग कौशल विकास पुस्तिका" एक अत्यंत सार्थक, उपयोगी एवं समयोचित प्रयास के रूप में सामने आती है। प्रस्तुत पुस्तक एक व्यावहारिक, सरल एवं कौशल विकास आधारित मार्गदर्शिका है, जिसका प्रमुख उद्देश्य विद्यार्थियों को हाउसकीपिंग की अवधारणा, उसके मूलभूत सिद्धांतों तथा उन्नत व्यावसायिक पहलुओं से परिचित कराना है। यह कृति राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के मानकों एवं निर्धारित पाठ्यक्रमों के अनुरूप तैयार की गई है, जिसमें कौशल एवं अनुभव आधारित रोजगारोन्मुख शिक्षण पर विशेष बल दिया गया है।

विशेष उल्लेखनीय तथ्य यह है कि यह पुस्तक हिंदी भाषा में लिखी गई "हाउसकीपिंग" विषय की प्रथम कौशल आधारित (Skill Based) पुस्तिका है। यह न केवल कौशल विकास पाठ्यक्रमों के विद्यार्थियों के लिए उपयोगी है, बल्कि गृह विज्ञान, होटल मैनेजमेंट एवं अन्य संबंधित व्यावसायिक पाठ्यक्रमों से जुड़े शिक्षार्थियों के लिए भी अत्यंत लाभकारी सिद्ध होती है। पुस्तक "सीखा–करो–कमाओ" की अवधारणा को सशक्त रूप से प्रोत्साहित करती है, जो आज के युवाओं के लिए अत्यंत आवश्यक है। उत्तराखंड जैसे प्रमुख पर्यटन राज्य के संदर्भ में इस पुस्तक का महत्व और भी बढ़ जाता है। राज्य में होटल, रिसोर्ट, होम–स्टे, धर्मशाला, आश्रम, ट्रैकिंग लॉज एवं अन्य पर्यटक आवासों की संख्या निरंतर बढ़ रही है, जिसके कारण प्रशिक्षित हाउसकीपिंग कर्मियों की मांग सदैव बनी रहती है। यह पुस्तक स्थानीय पर्यटन एवं आतिथ्य व्यवसाय की नवीनतम आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए विद्यार्थियों को रोजगारोन्मुख एवं सेवा–गुणवत्ता आधारित कौशल प्रदान करती है। सैद्धांतिक ज्ञान के साथ–साथ व्यवहारिक प्रशिक्षण पर दिया गया विशेष बल इसे अन्य पुस्तकों से अलग और विशिष्ट बनाता है, जिससे विद्यार्थी न केवल विषय को समझते हैं बल्कि उसे वास्तविक कार्यस्थल पर प्रभावी रूप से लागू भी कर पाते हैं। इस महत्वपूर्ण कृति की लेखिका डा० प्रभा बिष्ट वर्तमान में उच्च शिक्षा विभाग, उत्तराखंड सरकार के अंतर्गत शहीद दुर्गा मल्ल राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, डोईवाला में एसोसिएट प्रोफेसर (गृह विज्ञान) के पद पर कार्यरत हैं। वे गृह विज्ञान विषय की एक अनुभवी शिक्षाविद, शोधकर्ता एवं व्यवहारिक कौशल विकास की सशक्त प्रवर्तक हैं। गृह विज्ञान, खाद्य एवं पोषण, सामुदायिक पोषण, पारंपरिक खाद्य विरासत तथा सतत कौशल विकास उनके प्रमुख अध्ययन क्षेत्र रहे हैं। एकल लेखक के रूप में उनकी पुस्तकें "Community Nutrition in India" "Nutrition Education in Himalayas" तथा "Culinary Heritage of Uttarakhand" प्रकाशित हो चुकी हैं, जबकि सह–लेखिका के रूप में "पोषण स्तर निर्धारण" जैसी महत्वपूर्ण पुस्तक भी उनके नाम से जुड़ी है।

इसके अतिरिक्त उनके द्वारा राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय शोध

पत्रिकाओं और सम्मेलनों में 45 से अधिक शोध पत्र, पुस्तक अध्याय एवं स्व–अध्ययन पुस्तिकाएं प्रकाशित की जा चुकी हैं। वर्ष 2017 में उत्तराखंड राज्य विज्ञान एवं तकनीकी परिषद (देहरादून) द्वारा उन्हें युवा वैज्ञानिक पुरस्कार से सम्मानित किया गया। साथ ही, भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा वित्त पोषित 2018 की शोध परियोजना में उन्होंने परियोजना निदेशक के रूप में नेतृत्व प्रदान किया। वे अनेक शिक्षण संस्थानों में विषय विशेषज्ञ के रूप में भी नामित रही हैं।

कुल मिलाकर, "हाउसकीपिंग कौशल विकास पुस्तिका" केवल एक पाठ्य–पुस्तक नहीं, बल्कि कौशल, स्वावलंबन और सेवा–गुणवत्ता आधारित रोजगार की दिशा में एक ठोस मार्गदर्शक है। यह पुस्तक विद्यार्थियों, शिक्षकों, प्रशिक्षण संस्थानों तथा पर्यटन एवं आतिथ्य क्षेत्र से जुड़े सभी हितधारकों के लिए समान रूप से उपयोगी है। निःसंदेह, यह कृति कौशल भारत और आत्मनिर्भर भारत की संकल्पना को शैक्षिक धरातल पर साकार करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण योगदान है।

प्रस्तुति : अंकित तिवारी, उपसंपादक

डॉ. पुष्पा खंडूरी को नेपाल में मिला 'स्त्री शक्ति सम्मान-2026'

SPMBFN/IWD/2026/466

नेपाल सरकार द्वारा पंजीकृत
पंजीकरण संख्या - 1851/080/81

"अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस, 8 मार्च 2026 के अवसर पर शब्द प्रतिभा बहुक्षेत्रीय सम्मान फाउंडेशन, नेपाल द्वारा प्रदत्त"

प्रशस्ति पत्र

" स्त्री शक्ति सम्मान "

यह एक वैध डिजिटल ई-प्रशस्ति पत्र है। (VALID E-CERTIFICATE)

प्रो. डॉ. पुष्पा खण्डूरी, देहरादून, उत्तराखंड

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस, 8 मार्च 2026 के अवसर पर साहित्य, शिक्षा एवं समाजसेवा के माध्यम से समाज परिवर्तन में आपके उल्लेखनीय योगदान के लिए आपको "स्त्री शक्ति सम्मान – 2026" से सम्मानित किया जाता है। आपकी रचनात्मक प्रतिभा, ज्ञानवर्धक शिक्षण तथा समाज में सकारात्मक चेतना के प्रसार हेतु किए गए सतत प्रयास वास्तव में अनुकरणीय हैं। आपकी उपलब्धियाँ अनेक महिलाओं और नई पीढ़ी के लिए प्रेरणा का स्रोत हैं।

हम आपके उज्ज्वल भविष्य और निरंतर प्रगति की हार्दिक कामना करते हैं।

डॉ. प्रीति प्रसाद (प्रीत) [प्रतिभा चयन समिति संयोजक] | रमेशचन्द्र पटेल "आकाशदीप" [वरिष्ठ सलाहकार] | आनन्द गिरि मायालु [अध्यक्ष]

तिथि - 8 मार्च 2026 स्थान - लुंबिनी 5, नेपाल

प्रख्यात लेखिका, शिक्षाविद् और सामाजिक कार्यकर्ता डॉ. पुष्पा खंडूरी (देहरादून) को नेपाल स्थित शब्द प्रतिभा बहुक्षेत्रीय सम्मान फाउंडेशन द्वारा प्रतिष्ठित स्त्री शक्ति सम्मान–2026 से सम्मानित किया गया है।यह पुरस्कार उन्हें 8 मार्च को अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर नेपाल में प्रदान किया गया। यह सम्मान उन्हें साहित्य, शिक्षा और सामाजिक सेवा के क्षेत्र में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए दिया गया है। इस अवसर पर फाउंडेशन के अध्यक्ष आनंद गिरि मायालु ने डॉ० खंडूरी की ज्ञान के प्रसार और रचनात्मक साहित्यिक अभिव्यक्ति के प्रति समर्पण की सराहना की।

उन्होंने यह भी कहा कि उनका कार्य महिलाओं और युवा विद्वानों को लगातार प्रेरित करता है। सम्मान के लिए बधाई देते हुए फाउंडेशन ने आशा व्यक्त की कि वे आगे भी अपनी साहित्यिक और सांस्कृतिक गतिविधियों से जुड़ी रहेंगी।

प्रस्तुति : अमन तलवाड़, सह संपादक

पंय्यां: उत्तराखंड की लोकसंस्कृति और परंपरा की पहचान

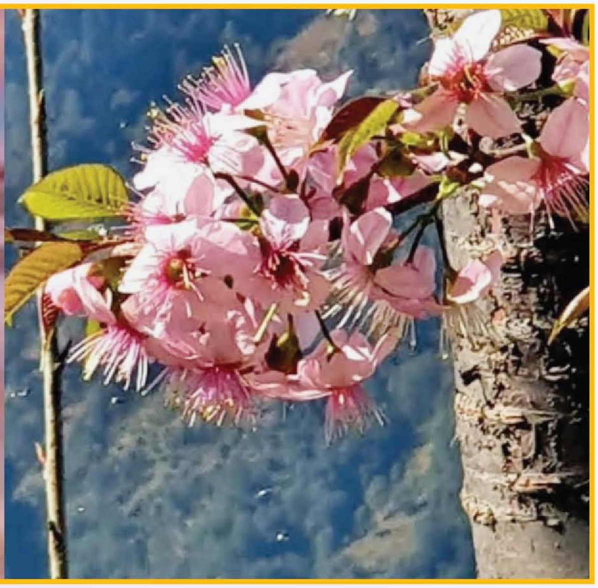

देवभूमि उत्तराखंड अपनी प्राकृतिक सुंदरता, समृद्ध जैव–विविधता और गहरी जड़ों वाली लोकसंस्कृति के लिए जाना जाता है। यहाँ का हर वृक्ष, हर नदी और हर पर्वत केवल प्राकृतिक तत्व नहीं, बल्कि जीवन, आस्था और परंपरा के प्रतीक हैं। इन्हीं में से एक महत्वपूर्ण वृक्ष है–पंय्यां (पदम) जो न केवल पारिस्थितिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि उत्तराखंड की लोकसंस्कृति, रीति–रिवाजों और जनजीवन में भी विशेष स्थान रखता है। इसका वैज्ञानिक नाम प्रूनस सेरासोइड्स *(Prunus cerasoides)* है, जिसे सामान्यतः वाइल्ड हिमालयन चेरी के नाम से जाना जाता है और यह रोजेसी (Rosaceae) कुल का एक पर्णपाती वृक्ष है। यह वृक्ष 1,200 से 2,400 मीटर की ऊँचाई पर समशीतोष्ण वनों में पाया जाता है और दक्षिण–पूर्व एशिया के उष्णकटिबंधीय उच्चभूमि क्षेत्रों तक भी फैला हुआ है। पंय्यां उत्तराखंड के पहाड़ी क्षेत्रों में व्यापक रूप से पाया जाने वाला एक पूजनीय माना जाने वाला वृक्ष है। यह वृक्ष अपनी सहनशीलता, उपयोगिता और पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखने की क्षमता के लिए जाना जाता है। इसकी पत्तियाँ, लकड़ी और अन्य भाग स्थानीय लोगों के दैनिक जीवन में विभिन्न रूपों में प्रयुक्त होते हैं। यह वृक्ष ऊँचाई वाले क्षेत्रों में भी आसानी से उग जाता है और कम संसाधनों में भी जीवित रहने की क्षमता रखता है। यही कारण है कि इसे पहाड़ों के जीवन का अभिन्न हिस्सा माना जाता है। उत्तराखंड की लोकसंस्कृति प्रकृति के साथ गहरे संबंध पर आधारित है। यहाँ के लोग पेड़–पौधों को केवल संसाधन नहीं, बल्कि जीवित अस्तित्व मानते हैं। पंय्यां वृक्ष भी इसी आस्था का प्रतीक है। ग्रामीण क्षेत्रों में कई धार्मिक अनुष्ठानों और त्योहारों में पंय्यां की पत्तियों का उपयोग किया जाता है। इसे शुभ माना जाता है और विवाह, पूजा तथा अन्य मांगलिक अवसरों पर इसका विशेष महत्व होता है।

कई स्थानों पर पंय्यां वृक्ष को देवताओं से जोड़कर भी देखा जाता है, जिससे इसकी पवित्रता और बढ़ जाती है। मैदानी क्षेत्रों में जैसे तुलसी और बेलपत्र को पवित्र माना जाता है, वैसे ही उत्तराखंड के पर्वतीय क्षेत्रों में पंय्यां के पत्तों का विशेष धार्मिक महत्व है। इसकी टहनियाँ और पत्तियाँ विवाह के मंडप को सजाने से लेकर हवन, पूजा और जागर जैसे हर शुभ अवसर में उपयोग की जाती हैं। गृह पूजा, यज्ञोपवीत इत्यादि में घरों में लगने वाली माला भी पंय्यां के पत्तों की ही बनाई जाती है। यह वृक्ष इतना महत्वपूर्ण है कि इसके बिना पहाड़ों में विवाह का मंडप अधूरा माना जाता है।प्रतिकूल परिस्थितियों में भी पंय्यां का वृक्ष सदैव हरा–भरा और जीवंत बना रहता है। कठोर शीतकाल के दौरान, जब अधिकांश पेड़ अपनी पत्तियाँ खोकर निस्तेज दिखाई देते हैं, तब यह दिव्य वृक्ष सुंदर पुष्पों से लद जाता है और जीवन का संदेश देता है। इसकी यह विशेषता इसे आशा, धैर्य और नवचेतना का प्रतीक बनाती है। विवाह समारोहों में इसके लकड़ी का उपयोग विशेष महत्व रखता है, क्योंकि इसे नवविवाहित जोड़े के जीवन में स्थिरता, समृद्धि और खुशहाली का शुभ संकेत माना जाता है, जो उनके संबंध को मजबूती प्रदान करता है।पूजा–अर्चना में यह अनिवार्य रूप से शामिल होते हैं। देवताओं के आवाहन, मंदिरों की सजावट तथा किसी व्यक्ति

की शुद्धि के लिए गोमूत्र के साथ पंय्यां के पत्तों का प्रयोग किया जाता है। उत्तराखंड की पारंपरिक देवसंस्कृति में आयोजित जागरों में भी पंय्यां का अलग स्थान है। यह केवल धार्मिक क्रिया का हिस्सा ही नहीं है, बल्कि लोकमान्यताओं के अनुसार इससे नकारात्मक शक्तियों का निवारण भी होता है।

यज्ञोपवीत, मुंडन, पांडव लीला, जागर और बैसी जैसे पारंपरिक धार्मिक आयोजनों में पंय्यां के वृक्ष का विशेष महत्व होता है। इन अनुष्ठानों में इसके डंठल या टहनियों का किसी न किसी रूप में अवश्य उपयोग किया जाता है, जिससे इसकी पवित्रता और सांस्कृतिक महत्ता का पता चलता है। धार्मिक कार्यक्रमों में बजाए जाने वाले वाद्यों की लुकुड़ी (छड़ी) के लिए भी पंय्यां की लकड़ी को सबसे पवित्र माना जाता है, क्योंकि इसे शुभ और देवतुल्य गुणों से युक्त समझा जाता है। पंय्यां एक अद्भुत आयुर्वेदिक पौधा है, जिसमें सूजन-रोधी, एंटीऑक्सीडेंट, पाचन, हृदय और श्वसन स्वास्थ्य संबंधी लाभ मौजूद हैं। इसमें पाए जाने वाले एंथोसायनिन, टैनीन और क्लोरोजेनिक एसिड का अनूठा मिश्रण इसकी प्रमुख क्रियाओं के पीछे जिम्मेदार है। यह गुण हिमालयी परंपराओं में सदियों से मान्यता प्राप्त हैं और आधुनिक वैज्ञानिक शोध भी इन्हें पुष्ट कर रहा है। पंय्यां का पुष्प उत्तराखंड में मधुमक्खियों के लिए शीतकालीन मकरंद का एक महत्वपूर्ण स्रोत है और यह अत्यंत मूल्यवान, कच्चा और औषधीय शहद प्रदान करता है।

उत्तराखंड की पारिस्थितिकी अत्यंत संवेदनशील है। यहाँ के जंगल केवल पेड़ों का समूह नहीं, बल्कि एक जटिल और संतुलित पारिस्थितिक तंत्र हैं। पंय्यां वृक्ष इस तंत्र का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।यह मिट्टी की उर्वरता बनाए रखने में सहायक होता है और जल संरक्षण में भी योगदान देता है। यह कई पक्षियों और छोटे जीवों के लिए आश्रय प्रदान करता है। इसके अलावा, यह जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने में भी सहायक हो सकता है, क्योंकि यह कार्बन को अवशोषित करता है और वातावरण को शुद्ध बनाता है। उत्तराखंड के ग्रामीण जीवन में पंय्यां वृक्ष का महत्व केवल उपयोगिता तक सीमित नहीं है। यह लोगों की भावनाओं और उनके दैनिक जीवन का हिस्सा है।

बचपन की यादों में पेड़ों पर चढ़ना, उनकी छाया में खेलना और प्रकृति के साथ समय बिताना शामिल होता है। पंय्यां वृक्ष भी इन यादों का हिस्सा बनता है। बुजुर्गों की कहानियों और लोकगीतों में भी इसका उल्लेख मिलता है, जो इसकी सांस्कृतिक गहराई को दर्शाता है। हर क्षेत्र की अपनी लोककथाएँ और मान्यताएँ होती हैं, जो उस समाज की सोच और जीवनशैली को दर्शाती हैं। उत्तराखंड में भी पंय्यां वृक्ष से जुड़ी कई लोक-गीत, कहानियाँ और मान्यताएँ प्रचलित हैं। कुछ स्थानों पर इसे शुभ वृक्ष माना जाता है, जबकि कुछ जगहों पर इसे रक्षक के रूप में देखा जाता है। यह विश्वास लोगों को प्रकृति के प्रति सम्मान और संरक्षण की भावना सिखाता है। पंय्यां के पेड़ को कभी काटा नहीं जाता, बल्कि केवल उसकी सूखी या आवश्यक टहनियों का ही उपयोग धार्मिक कार्यों में किया जाता है। इस परंपरा के कारण न केवल पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा मिलता है, बल्कि यह वृक्ष भी लंबे समय तक सुरक्षित रहता है।

पंय्यां उत्तराखंड की लोकसंस्कृति और परंपरा का जीवंत प्रतीक है। यह केवल एक पेड़ नहीं, बल्कि प्रकृति और मानव के बीच के गहरे संबंध का प्रतिनिधित्व करता है। इसकी जड़ों में इतिहास है, पत्तियों में जीवन और शाखाओं में भविष्य की संभावनाएँ। आज आवश्यकता है कि हम इस वृक्ष के महत्व को समझें और इसे संरक्षित करने के लिए मिलकर प्रयास करें क्योंकि जब हम पंय्यां को बचाते हैं, तो हम केवल पर्यावरण ही नहीं, बल्कि अपनी पहचान, अपनी संस्कृति और अपनी विरासत को भी सुरक्षित रखते हैं। इस प्रकार, पंय्यां वास्तव में उत्तराखंड की आत्मा का एक अभिन्न हिस्सा है-एक ऐसा प्रतीक जो हमें प्रकृति से जुड़ने और उसे सम्मान देने की प्रेरणा देता है।

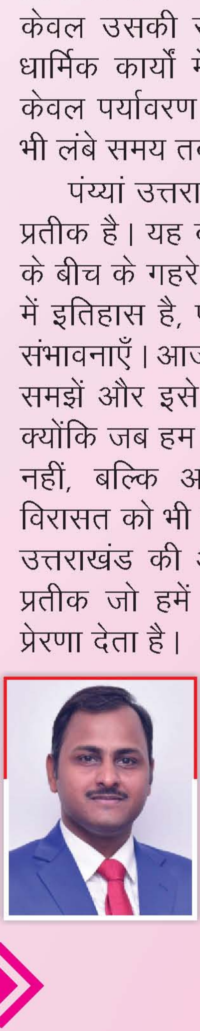

प्रस्तुति : डॉ. इंद्रेश कुमार पाण्डेय
असिस्टेंट प्रोफेसर (वनस्पति विज्ञान),
डॉ. शिवानंद नौटियाल राजकीय स्नातकोत्तर
महाविद्यालय, कर्णप्रयाग (चमोली)

उत्तराखण्ड में स्थानों के नाम में छिपा है पौराणिक इतिहास

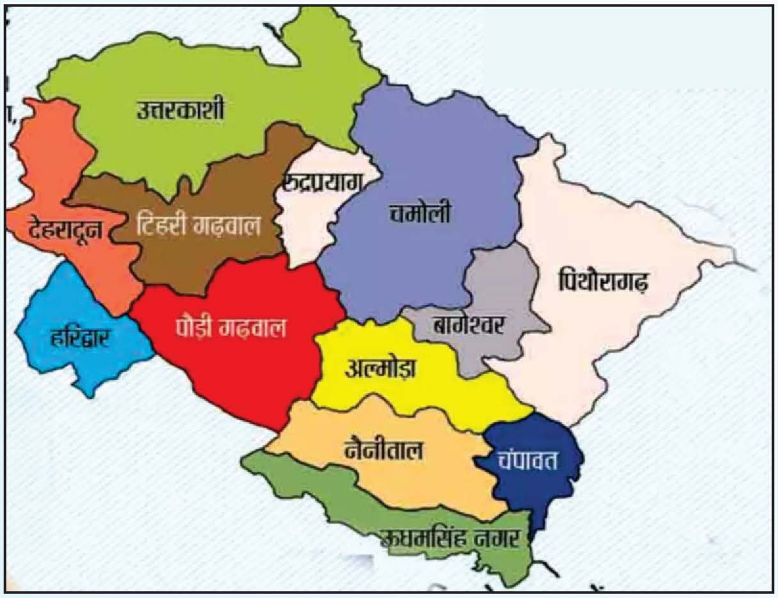

उत्तराखण्ड राज्य में अपना भौगोलिक, राजनीतिक, सामाजिक व पौराणिक इतिहास समाया हुआ है। राज्य के कुमाऊं व गढ़वाल क्षेत्र में अनेक किंवदंतिया प्रचलित हैं जिन्होंने राज्य की एक अलग पहचान बनाई है। इसी क्रम में यहाँ के अनेक क्षेत्रों के नामकरण किये गये हैं।

छिन :— कुमाऊँ क्षेत्र में छिन शब्द का अर्थ है पर्वत शिखर जिसका सम्बन्ध घाटी से होता है। इसलिए ऐसे पर्वतीय क्षेत्र जिसमें घाटियां जुड़ी होती है उन क्षेत्रों के नाम में छिना शब्द जुड़ा होता है। कुमाऊँ में अनेक क्षेत्र जैसे –कनालीछीना, बाड़ेछीना, चलनीछीना आदि ऐसे ही स्थान हैं, जो उस क्षेत्र की भौगोलिक स्थिति को दर्शाते हैं।

ताल :— ताल शब्द से ही प्रतीत होता है कि ये शहर किसी ताल के किनारे बसे होंगे। नैनीताल, खुर्पाताल, भीमताल, नौकुचियाताल, सातताल, नलदमयन्तीताल, सडियाताल जैसे क्षेत्रों के आस –पास ताल या झील अवश्य होगी।

खाल :— वर्षा के जल को संग्रहित कर बनने वाले ताल को बावड़ी कहते हैं। स्थानीय भाषा में इसे खाव या खाल कहा जाता है। इसी शब्द पर आधारित क्षेत्रों के नाम प्रचलित हैं **जैसे** :— कुमाऊँ में घोड़ाखाल, सुन्दरखाल तथा गढ़वाल में रिखणीखाल व ड्योड़ाखाल जो सुनिश्चित करते हैं कि वर्तमान में यहाँ खाल होगा अथवा पूर्व में कभी रहा होगा।

धुर :— धुर, धुरा व धार शब्द स्थानीय भाषा में पर्वत शिखर के लिए प्रयुक्त होता है। अतः अनेक स्थान जो ऊँचाई वाले पर्वतों पर बसे होंगे, उन्हे इन शब्दों को जोड़ कर नाम दिये गये हैं – देवीधुरा, सैमधार, भूमियाधार, पौधार, जाखणीधार आदि स्वयं ही अपना इतिहास बता देते हैं।

घाट :— जैसा कि नाम से ही विदित है कि नदियों के किनारे बसे स्थान जो कि घाटियों से घिरे हों, घाट कहलाते हैं। कुमाऊँ क्षेत्र में काफी संख्या में ऐसे स्थान हैं जिनका नामकरण घाट लगा कर किया गया है। काकड़ीघाट, रातीघाट, भुजियाघाट, शेराघाट, रातीघाट, लोहाघाट , देघाट आदि। पिथौरागढ़ के पास एक स्थान का नाम सिर्फ घाट है।

खान :— जैसा कि नाम से परिलक्षित होता है ये किसी भी मुस्लिम नाम का आधार नहीं है। खान पर आधारित नाम के पीछे कोई वास्तव में कोई उचित साक्ष्य नहीं मिलते हैं। ये खण्ड शब्द का अपभ्रंश हो सकता है। किसी विशेष जाति या वर्ग के निवास की पीछे उपसर्ग लगा कर नाम स्थानों की नाम बनाये गये हैं जैसे– हैड़ाखान, भत्तरौंजखान, बल्दियाखान, चमड़खान और चीनाखान आदि।

सैण :— कुमाऊँ में पहाड़ों के बीच के मैदानी भू–भाग को सैंण कहा जाता है। ऐसे स्थान जो कि पहाड़ों के बीच मैदानी भाग में बसे हैं उनके नाम में ये शब्द जगाये गये हैं जैसे – गैरसैंण, थलीसैंण, भिकियासैंण, भराड़ीसैंण।

कोट :— कोट शब्द से किले का आभास होता है अर्थात जिन स्थानों पर कभी किले रहे होंगे तो उनके अन्त में कोट लगाया जाता है ।धनियाकोट , ऊँचाकोट, ज्योलीकोट, स्यूनरकोट।

जातियों पर आधारित नाम :— कुमाऊँ क्षेत्र के एक बड़ी विशेषता और देखने को मिलती है कि यहां अनेक शहर व मोहल्लों के नाम एक निश्चित जातिगत समुदाय के उस निवास करने के कारण रखे गये हैं जैसे जोशीखोला, तिवारीखोला, पाण्डेखोला, कर्नाटकखोला, बामनखोला। इसके अतिरिक्त निगलाट के निगल्टिया, बुढलाकोट के बुढलाकोटी, पाडली के पडलिया, लमगढ़ा के लमगढ़िया आदि।

प्रस्तुति : डॉ. विनीता चौधरी
एसोसिएट प्रोफेसर,
डी.डब्लू.टी.कॉलेज, देहरादून

ब्लड डोनेशन

देहरादून में विशाल रक्तदान शिविर में 210 यूनिट रक्त हुआ एकत्र

देहरादून में 15 मार्च को लाईफ केयर पैथोलॉजी सेंटर द्वारा 15वें विशाल स्वैच्छिक रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में युवाओं,सामाजिक कार्यकर्ताओं, महिलाओं और विभिन्न संस्थाओं से जुड़े लोगों ने बढ़–चढ़कर भाग लिया और कुल 210 यूनिट रक्त एकत्रित किया गया। नेहरू कॉलोनी – 6 नबंर पुलिया के निकट स्थित लाइफ केयर पैथोलॉजी सेंटर और लाइफ केयर फाउंडेशन ने संयुक्त रूप से इस रक्तदान शिविर का आयोजन किया।

शिविर के आयोजक राजेश रावत ने बताया कि फाउंडेशन विगत 15 वर्षों से मेडिकल कैंप और रक्तदान शिविर का आयोजन कर रही है। शिविर में रक्तदान करने के लिए शहर ही नहीं बल्कि आसपास के क्षेत्रों से भी बड़ी संख्या में लोग पहुंचे। आयोजकों ने रक्तदाताओं का स्वागत कर उन्हें प्रमाण पत्र और स्मृति चिन्ह भेंट किए। शिविर में बतौर मुख्य अतिथि बीजेपी के प्रदेश अध्यक्ष एवं राज्य सभा सांसद महेंद्र भट्ट उपस्थित रहे।अति विशिष्ट अतिथि मेयर सौरभ थपलियाल, विशिष्ट अतिथि एसपी सिटी प्रमोद कुमार सहित अपर निदेशक चिकित्सा स्वास्थ्य एवं एमएस मेडिकल कॉलेज अस्पताल डॉ. रविंद्र बिष्ट, वरिष्ठ आंदोलनकारी रविंद्र जुगराण, वरिष्ठ फिजिशियन डॉ.एस.डी. जोशी, उत्तरांचल प्रेस क्लब के अध्यक्ष अजय राणा,कोषाध्यक्ष मनीष डंगवाल, CIMS & UIHMT ग्रुप ऑफ कॉलेज के चेयरमैन ललित जोशी,पार्षद कमली भट्ट, मेम्बर बार काउंसिल राजबीर सिंह बिष्ट, पीआरओ दून मेडिकल कॉलेज संदीप राणा सहित अनेक गणमान्य लोगों,पत्रकारों व समाजसेवियों ने रक्तदान का महत्व बताते हुए रक्तदाताओं का उत्साहवर्धन किया। रक्त संग्रहण की संपूर्ण प्रक्रिया देहरादून कारगी चौक स्थित पल्स ब्लड सेंटर की टीम द्वारा की गई।

प्रस्तुति–
प्रो. जानकी पंवार, सेवानिवृत्त प्राचार्य,
सदस्य सलाहकार मंडल साईं सृजन पटल

बालेश्वर महादेव मंदिर : लोकआस्था, परंपरा और सांस्कृतिक चेतना का जीवंत प्रतीक

देवभूमि उत्तराखंड की पावन धरा पर विराजमान भगवान बालेश्वर महादेव क्षेत्र की अटूट आस्था, प्राचीन परंपरा और शिवभक्ति के दिव्य प्रकाशस्तंभ माने जाते हैं। लोकमान्यताओं के अनुसार बालेश्वर देवता सात दिव्य भाइयों में सबसे छोटे, किंतु अत्यंत तेजस्वी और प्रभावशाली स्वरूप थे। उनका संबंध टिहरी गढ़वाल के घनसाली क्षेत्र से माना जाता है, जहाँ वे केमर के राणा तथा बांसर के सयाणा (प्रधान) के रूप में विख्यात थे, जो उनके नेतृत्व, पराक्रम और धर्मरक्षक स्वरूप को दर्शाता है। कालांतर में उन्होंने उत्तरकाशी जनपद के मणि गाँव के नेगी परिवार में अवतार धारण कर इस क्षेत्र को अपनी कर्मभूमि बनाया। तभी से वे जनमानस के रक्षक, संकटहारी और लोककल्याणकारी देवता के रूप में प्रतिष्ठित हुए, उनकी दिव्य कृपा से क्षेत्र में सुख, शांति और समृद्धि का वास होता है। आज भी भक्तगण सच्चे मन से उनका स्मरण कर जीवन की बाधाओं से मुक्ति और आत्मिक बल का अनुभव करते हैं। बालेश्वर देवता का यह गौरवशाली इतिहास केवल एक लोककथा नहीं, बल्कि विश्वास, समर्पण और सनातन परंपरा की अमिट गाथा है, जो पीढ़ी दर पीढ़ी श्रद्धा के साथ हृदयों में जीवित है।

दिव्य प्राकट्य की अलौकिक गाथा

स्थानीय श्रद्धा और जनश्रुति के अनुसार, भगवान बालेश्वर महादेव ने हरूली नामक पावन स्थल पर स्वयंभू शिवलिंग के रूप में दिव्य प्राकट्य किया। यह कोई साधारण प्रकट होना नहीं था, बल्कि ईश्वरीय लीला का अद्भुत संकेत था। समय बीतने पर नेगी परिवार के पूर्वजों की एक गाय प्रतिदिन हरूली में चरने जाया करती थी। किंतु आश्चर्य यह था कि दिनभर चरने के बाद वह एक स्वयंभू शिवलिंग के समीप जाकर अपने आप ही दूध की पवित्र धारा अर्पित कर देती थी। तत्पश्चात उसके स्वामी को घर पर दूध नहीं मिल पाता था। लगातार कई दिनों तक ऐसा होने पर स्वामी के मन में संदेह उत्पन्न हुआ। सत्य जानने के लिए एक दिन वे चुपचाप गाय के पीछे–पीछे हरूली पहुँचे और वृक्षों की ओट में छिपकर प्रतीक्षा करने लगे। सायंकाल का वह पवित्र क्षण आया, जब गाय ने अत्यंत श्रद्धा से शिवलिंग पर दूध अर्पित करना प्रारंभ किया, यह अलौकिक दृश्य देखकर वे विस्मित तो हुए, किंतु आवेश में आकर उन्होंने उस स्वयंभू शिवलिंग पर प्रहार कर दिया। कहा जाता है कि शिवलिंग तीन खंडों में विभक्त हो गया। एक खंड नेगी परिवार के घर आ गिरा, दूसरा वर्तमान मंदिर स्थल पुजार

गाँव में स्थापित हुआ, और तीसरा खंड उसी हरूली की पावन भूमि पर स्थित रह गया। इस दिव्य घटना के पश्चात मंदिर स्थल में अद्भुत चमत्कार प्रकट होने लगे, लोगों ने अनुभव किया कि यह स्थान साधारण नहीं, बल्कि स्वयं महादेव की कृपा से आलोकित सिद्ध पीठ है। तभी से भगवान बालेश्वर महादेव की महिमा दूर–दूर तक फैल गई और यह स्थल श्रद्धालुओं के लिए आस्था, चमत्कार और दिव्य अनुभूति का केंद्र बन गया। यह कथा केवल प्राकट्य की नहीं, बल्कि ईश्वर की अनंत लीला और भक्तों पर बरसती उनकी असीम कृपा की अमर गाथा है।

महाशिवरात्रि की दिव्य रात्रि आस्था, परंपरा और अलौकिक साधना

सर्वप्रथम इस पावन अवसर पर चारों गाँवों के श्रद्धालु अपार श्रद्धा और उल्लास के साथ एकत्रित होते हैं। देवता की पवित्र निशानियाँ, पारंपरिक वाद्य यंत्र और चाँदी से सुसज्जित ढोल–नगाड़ों को बड़े आदरपूर्वक अलंकृत किया जाता है। जब भव्य शोभायात्रा आरंभ होती है, तो ऐसा प्रतीत होता है मानो स्वयं देवमंडल धरती पर अवतरित हो गया हो। "हर–हर महादेव" और "जय श्री बालेश्वर महादेव" के गगनभेदी जयघोष से सम्पूर्ण क्षेत्र दिव्य ऊर्जा से स्पंदित हो उठता है।

महाशिवरात्रि का पावन पर्व यहाँ अद्भुत आस्था, तपस्या और भक्ति का दिव्य संगम बन जाता है। इस परम पवित्र अवसर पर मंदिर प्रांगण भक्तों की अखंड श्रद्धा से आलोकित हो उठता है। क्षेत्रवासियों के साथ–साथ दूर–दूर से आए श्रद्धालु व्रत धारण कर, हाथों में दीपक लेकर एक ही स्थान पर शांत भाव से विराजमान होते हैं और संपूर्ण रात्रि भगवान बालेश्वर महादेव के श्रीचरणों में ध्यानमग्न होकर "ऊँ नमः शिवाय" जप, स्तुति और स्मरण करते हैं। मान्यता है कि इस दिव्य रात्रि में की गई निष्काम साधना और अटूट भक्ति से बालेश्वर महादेव अति प्रसन्न होकर अपने भक्तों के समस्त कष्ट हर लेते हैं। भूत–प्रेत बाधाएँ, नकारात्मक शक्तियों का प्रभाव और जीवन के गहन दुःख बालेश्वर महादेव की कृपा से नष्ट हो जाते हैं। जो भी भक्त सच्चे मन, निर्मल हृदय और अटूट विश्वास के साथ प्रार्थना करता है, उसकी मनोकामनाएँ अवश्य पूर्ण होती हैं। यहाँ भक्ति ही साधन है, श्रद्धा ही शक्ति है और शिव ही परम सत्य हैं। दिव्य पीपल वृक्ष की अद्भुत कथा गोरखाओं के युद्धकाल का वह भयावह समय था, जब गोरखा सैनिक मंदिरों में लूटपाट करते हुए आगे बढ़ रहे थे। कहा जाता है कि जब वे इस पावन मंदिर की ओर आए, तब मंदिर के समीप स्थित एक छोटे से पीपल के वृक्ष के नीचे भगवान बालेश्वर महादेव के चाँदी के ढोल–दमाऊ, भंकोर और अन्य पवित्र वाद्य यंत्र सुरक्षित रखे हुए थे। जैसे ही संकट निकट आया, उस छोटे से पीपल ने चमत्कारिक रूप से विशाल स्वरूप धारण कर लिया और उन दिव्य वाद्य यंत्रों को अपने भीतर समाहित कर लिया, मानो स्वयं प्रकृति ने भगवान की धरोहर की रक्षा का संकल्प लिया हो। स्थानीय जनश्रुति के अनुसार, पूर्वज बताते थे कि कई वर्षों तक उस वृक्ष के भीतर से कभी–कभी ढोल–दमाऊ की मधुर ध्वनि सुनाई देती थी, जैसे देव आराधना आज भी अनवरत चल रही हो। और भी आश्चर्य की बात यह है कि आज भी उस पीपल के तने पर पंचनाग के समान आकृतियाँ स्पष्ट दिखाई देती हैं, जो भगवान बालेश्वर महादेव के दिव्य नागों का आभास कराती हैं। वृक्ष का असाधारण विशाल रूप और उस पर उकेरी गई दिव्य आकृतियाँ, स्थानीय लोगों द्वारा कही गई इन चमत्कारी घटनाओं को मानो सत्य सिद्ध करती प्रतीत होती हैं। यह कथा केवल एक वृक्ष की नहीं, बल्कि आस्था, संरक्षण और दिव्य चमत्कार की अमर गाथा है।

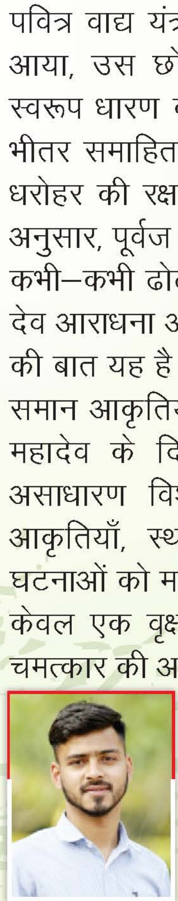

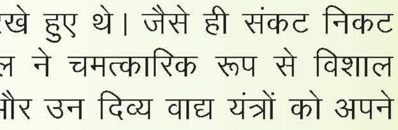

प्रस्तुति–
प्रवेश चन्द रमोला

"जो स्वयं जला वही दीप बना"
छात्रों के पथप्रदर्शक : भगवान सिंह धामी

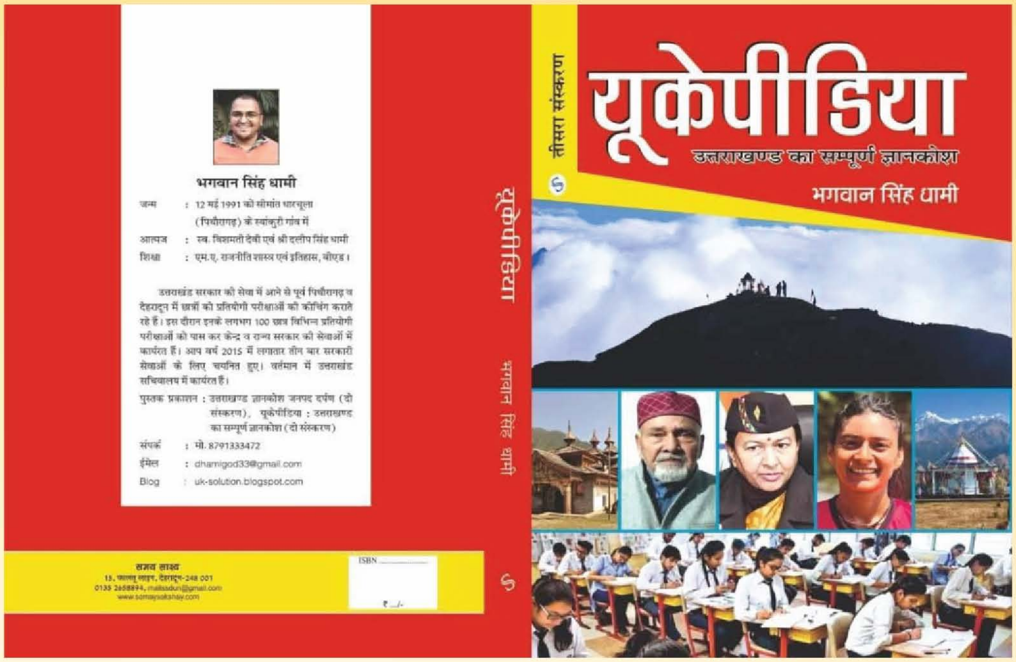

हर व्यक्ति का जीवन अपने आप में एक स्वतंत्र कथा होता है अनूठा, संघर्षों से भरा और अनुभवों से परिपूर्ण। जीवन का यह सफर जितना मोहक दिखता है, उतना ही कठोर भी होता है। यही संघर्ष मनुष्य को गढ़ते हैं, उसे साधारण से असाधारण बनाते हैं। अधिकांश लोग दुनिया को समझने और जमाने के अनुरूप ढलने में ही अपना जीवन बिता देते हैं, परंतु कुछ ऐसे भी होते हैं जो स्वयं दीपक बनकर दूसरों के जीवन को प्रकाशित कर देते हैं। आज हम ऐसे ही एक व्यक्तित्व की बात कर रहे हैं। पहाड़ की पथरीली पगडंडियों से निकलकर, गांव की मिट्टी की सोंधी खुशबू को अपने व्यक्तित्व में समेटे, हजारों युवाओं के सपनों को दिशा देने वाले भगवान सिंह धामी। वे आज केवल एक नाम नहीं, बल्कि विशेषकर पहाड़ के सुदूरवर्ती अंचलों के विद्यार्थियों के लिए ज्ञान का तीर्थ बन चुके हैं, ऐसे क्षेत्रों के लिए जहां आज भी शिक्षा के संसाधन पर्याप्त नहीं हैं। 12 मई 1991 को ग्राम स्यांकुरी, धारचूला (पिथौरागढ़) में जन्मे भगवान सिंह धामी का पालन–पोषण एक किसान परिवार में हुआ। माता स्व. विशमती देवी और पिता श्री दलीप सिंह धामी ने सीमित संसाधनों में भी संस्कार और संघर्ष की शिक्षा दी। उन्होंने एम.ए. (राजनीति विज्ञान एवं इतिहास) तथा बी.एड. की शिक्षा अर्जित की, पर यह उपलब्धि केवल डिग्रियों तक सीमित नहीं रही, बल्कि समाज–सेवा की दृढ़ प्रतिज्ञा में बदल गई।

मेहनतकश पहाड़ से उठता एक ज्ञानयात्री

कहते हैं–"गुरु अनंत, गुरु कथा अनंता।" भारत की प्राचीन परंपरा में गुरु को साक्षात् ज्ञान का स्वरूप माना गया है। गुरु वह सेतु है, जिस पर चलकर शिष्य आत्मज्ञान और सार्थकता के शिखर तक पहुंचता है। भगवान सिंह धामी एक किसान परिवार से आते हैं। संसाधनों के घोर अभाव के बीच उनका बचपन बीता। पिता ने कृषि कार्य करते हुए अपने पाँच बच्चों का पालन–पोषण किया। अभावों के बावजूद भगवान सिंह बचपन से ही प्रतिभाशाली रहे। विद्यालयी पढ़ाई के साथ–साथ पत्र–पत्रिकाओं और प्रेरक साहित्य में उनकी गहरी रुचि थी। पहाड़ों की आर्थिकी हमेशा चुनौतीपूर्ण रही है। आर्थिक संकट का यह साया भगवान धामी ने भी निकट से देखा, किंतु कभी भी इसे अपने सपनों के आड़े नहीं आने दिया। पाँच भाई–बहनों के संयुक्त परिवार से निकलकर स्वयं को सिद्ध करना आसान नहीं था, परंतु उन्होंने हार नहीं मानी। अपने बड़े भाई पान सिंह धामी–जो उनके गांव से बी.एड. करने वाले प्रथम व्यक्ति थे, को वे अपनी प्रेरणा का स्रोत मानते हैं। गांव के सरकारी विद्यालय से उन्होंने दसवीं उत्तीर्ण की। आज भी वे बताते हैं कि उनके गांव में नेटवर्क, स्वास्थ्य और मूलभूत सुविधाओं का अभाव है। इससे सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है कि उन्होंने कितनी कठिन परिस्थितियों में शिक्षा प्राप्त की। मैट्रिक के बाद उनकी बड़ी बहन जानकी और जीजा वीर सिंह ने आगे की पढ़ाई की जिम्मेदारी उठाई यही वह मोड़ था जिसने उनके भविष्य को नई दिशा दी।

फर्श से अर्श तक : संघर्षों की तपती राह

भगवान सिंह धामी कभी परिस्थितियों से हताश नहीं हुए।

सपनों की लौ उनके भीतर बचपन से जलती रही। वर्ष 2009 में 12वीं उत्तीर्ण करने के बाद रोजगार की तलाश शुरू हुई। सेवायोजन कार्यालय के माध्यम से एक सुरक्षा कंपनी में चयन हुआ। देहरादून के सेलाकुई के निकट राजवाला जंगल स्थित प्रशिक्षण केंद्र में मात्र चार दिन बाद 6000 रुपये जमा न कर पाने के कारण उन्हें बाहर कर दिया गया। जेब में सीमित पैसे और मन में टूटे सपनों के साथ वे किसी तरह घर लौटे। वर्ष 2010 में उन्होंने रुद्रपुर सिडकुल का रुख किया। पहली नौकरी नेस्ले कंपनी में मैगी पैकिंग की थी। आठ घंटे की ड्यूटी और 3900 रुपये वेतन। पंद्रह–बीस दिन बाद 2100 रुपये लेकर नौकरी छोड़ी और 5000 रुपये वेतन वाली सुरक्षा गार्ड की नौकरी पकड़ ली–बारह घंटे की ड्यूटी के साथ। पर नियति कुछ और ही लिख चुकी थी। 2012 में उन्होंने स्नातक की पढ़ाई पूरी की और 2013 से पूरी तरह पढ़ाई पर ध्यान केंद्रित किया। एक वर्ष बाद ही शिक्षण संस्थानों में पढ़ाने का सिलसिला शुरू हो गया। वर्ष 2015 में उन्होंने हाईकोर्ट क्लेरिकल परीक्षा उत्तीर्ण की, किंतु निर्धन छात्रों को दी जा रही निशुल्क कोचिंग के कारण इस नौकरी को छोड़ दिया। उसी वर्ष ग्रुप–सी परीक्षा भी पास की, पर छात्रों की जिम्मेदारी को प्राथमिकता देते हुए यह अवसर भी ठुकरा दिया। अंततः 2016 में राज्य की सरकारी सेवा में चयन हुआ, जिसे उन्होंने स्वीकार किया। आज वे उत्तराखंड राज्य सचिवालय, देहरादून में सहायक समीक्षा अधिकारी के पद पर कार्यरत हैं।

जिज्ञासाओं के धाम : धामी

वे छात्रों की जिज्ञासाओं को अपने ज्ञान से दिशा देते हैं। आज राज्य का शायद ही कोई प्रतियोगी छात्र होगा, जिसके पास धामी सर के नोट्स न हों। विशेषकर पहाड़ों के उन विद्यार्थियों के लिए वे आशा की किरण हैं, जिनके पास कोचिंग की सुविधाएं नहीं हैं। स्वयं एक विद्यार्थी के रूप में संघर्ष झेलने के कारण वे छात्रों की पीड़ा को भली–भांति समझते हैं। उनका उद्देश्य स्पष्ट है–कोई भी छात्र शिक्षा के संसाधनों से वंचित न रहे।

'उत्तराखंड ज्ञानकोष' : डिजिटल युग का ज्ञान अभियान

वर्ष 2019 में छात्रों को समसामयिक विषयों से जोड़ने के उद्देश्य से उन्होंने फेसबुक पेज "उत्तराखंड ज्ञानकोष" शुरू किया, जो आगे चलकर "उत्तराखंड ज्ञानकोष यूकेपीडिया" के नाम से प्रसिद्ध हुआ। आज इस मंच से लगभग 12,000 से अधिक लोग जुड़े हैं। उन्होंने "उत्तराखंड ज्ञानकोष जनपद दर्पण" (भाग–1 : 2019, भाग–2 : 2020) और "यूकेपीडिया" जैसी महत्वपूर्ण पुस्तकें लिखीं। यूकेपीडिया का विमोचन फरवरी 2021 में हुआ।

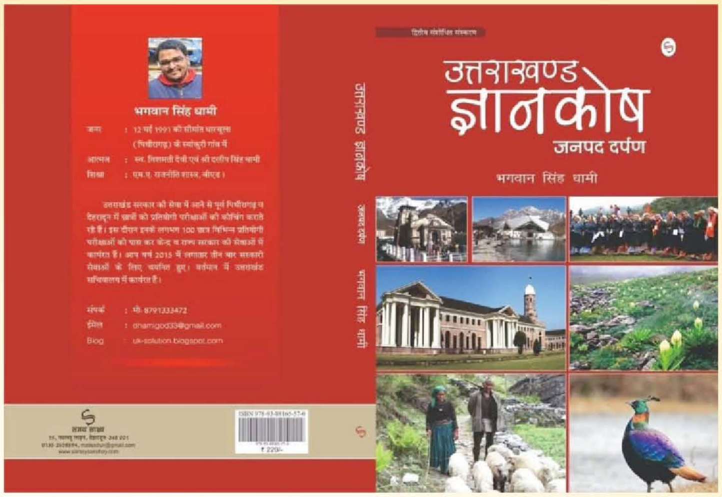

लॉकडाउन में आशा की किरण व सफलता : प्रेरणा संवाद

जून 2020 के लॉकडाउन में जब कोचिंग संस्थान बंद हो गए और छात्र निराशा से घिर गए, तब भगवान धामी ने सोशल मीडिया के माध्यम से एक अनोखी पहल की। उन्होंने कोचिंग संचालकों, शिक्षकों, सफल विद्यार्थियों, शोधार्थियों, लेखकों और साहित्यकारों को लाइव संवाद के लिए आमंत्रित किया। "सफलता–प्रेरणा संवाद" श्रृंखला ने हजारों छात्रों को मानसिक संबल और मार्गदर्शन दिया।

व्हाट्सएप पर गुरु : सहज, सुलभ, समर्पित

छात्रों के भविष्य को सर्वोपरि रखते हुए उन्होंने अपना व्यक्तिगत व्हाट्सएप नंबर सार्वजनिक किया। छात्र संदेश और फोन कॉल के माध्यम से सीधे उनसे संपर्क कर अपनी शंकाओं का समाधान करते हैं। यह समर्पण वास्तव में अनुकरणीय है। आज उनके द्वारा मार्गदर्शित असंख्य छात्र राज्य और केंद्र सरकार की विभिन्न सेवाओं में कार्यरत हैं यह उनके प्रयासों की सबसे बड़ी सफलता है।

नवीन कृति : 'यूकेपीडिया – MCQ Version'

अब शीघ्र ही उनकी नई पुस्तक "यूकेपीडिया– MCQ Version" आने वाली है, जिसका उद्देश्य प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रहे युवाओं को सटीक, संक्षिप्त और उपयोगी सामग्री उपलब्ध कराना है। भगवान सिंह धामी का जीवन इस बात का प्रमाण है कि सीमित संसाधन, कठिन परिस्थितियां और असफलताएं यदि दृढ़ संकल्प से टकराएं, तो वे मार्ग की बाधा नहीं बल्कि सीढ़ियां बन जाती हैं। वे आज केवल एक शिक्षक या अधिकारी नहीं, बल्कि हजारों विद्यार्थियों के लिए प्रेरणा, पथप्रदर्शक और ज्ञानतीर्थ हैं। उनकी यह यात्रा हमें सिखाती है यदि उद्देश्य शिक्षा और सेवा हो, तो साधारण जीवन भी असाधारण इतिहास रच सकता है।

प्रस्तुति : अंकित तिवारी, उपसंपादक

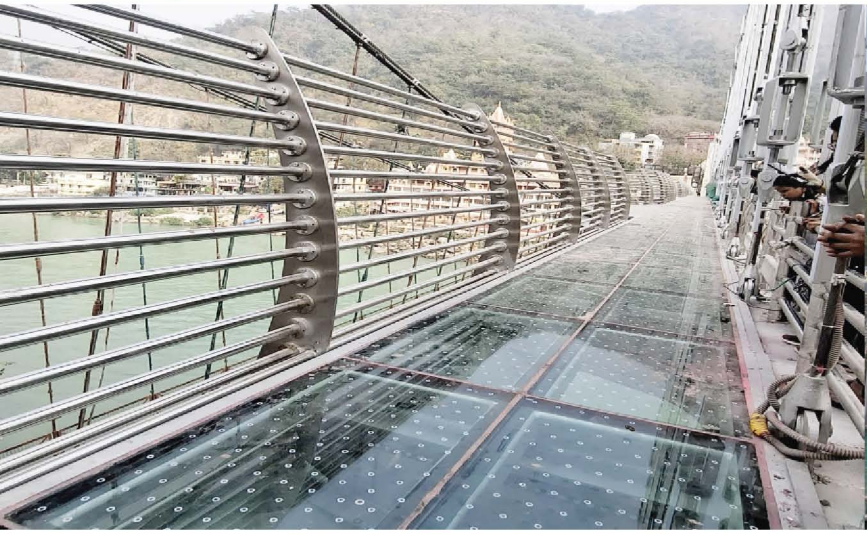

तकनीक

आस्था, आधुनिकता और पर्यटन का नया प्रतीक: ऋषिकेश का 'बजरंग सेतु'

उत्तराखंड की आध्यात्मिक नगरी ऋषिकेश का नाम सुनते ही मन में गंगा तट, मंदिरों की घंटियाँ, योग–साधना और आस्था से भरा वातावरण उभर आता है। वर्षों से यह शहर केवल एक पर्यटन स्थल नहीं, बल्कि आध्यात्मिक चेतना का केंद्र रहा है। इसी पवित्र नगरी की पहचान रहे ऐतिहासिक लक्ष्मण झूला की स्मृतियों के बीच अब एक नई पहचान आकार ले रही है–'बजरंग सेतु'। यह सेतु केवल एक पुल नहीं, बल्कि परंपरा और आधुनिकता के संगम का अद्भुत उदाहरण बनने जा रहा है। करीब 132 मीटर लंबा और लगभग 69 करोड़ रुपये की लागत से निर्मित यह आधुनिक सस्पेंशन ब्रिज इंजीनियरिंग का बेजोड़ नमूना माना जा रहा है। गंगा नदी के ऊपर बनने वाला यह पुल न केवल आवागमन को सुगम बनाएगा, बल्कि पर्यटकों को एक अनोखा अनुभव भी देगा। इस पुल की सबसे खास विशेषता इसका पारदर्शी कांच का फुटपाथ है, जो पैदल यात्रियों को गंगा की धारा को नीचे बहते हुए देखने का रोमांचक अनुभव देगा। दोनों ओर बने लगभग डेढ़–डेढ़ मीटर चौड़े ग्लास वॉकवे इस पुल को देश के सबसे अनोखे पुलों में शामिल करते हैं। इतिहास के पन्नों में दर्ज लगभग 100 वर्ष पुराने लक्ष्मण झूला को 16 अप्रैल 2022 को सुरक्षा कारणों से बंद करना पड़ा था। विशेषज्ञों, विशेषकर भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान रुड़की की रिपोर्ट में इसकी तारों को जर्जर बताया गया था, जिसके बाद प्रशासन ने एहतियातन इसे अनिश्चितकाल के लिए बंद कर दिया। इसके बाद लोक निर्माण विभाग, नरेंद्रनगर द्वारा इसके निकट ही बजरंग सेतु का निर्माण कार्य आरंभ किया गया, जो अब लगभग पूर्णता की ओर है। यह पुल केवल एक आधुनिक संरचना नहीं, बल्कि धार्मिक प्रतीकों से सुसज्जित सांस्कृतिक धरोहर के रूप में भी तैयार किया गया है। इसके दोनों छोरों पर प्रवेश द्वार केदारनाथ मंदिर की आकृति में बनाए गए हैं, जो यात्रियों को आध्यात्मिक भाव से जोड़ते हैं। साथ ही पुल के दोनों ओर पंचमुखी हनुमान जी की आकृतियाँ स्थापित की गई हैं, जो इस पुल को "बजरंग सेतु" नाम की सार्थकता प्रदान करती हैं। बजरंग सेतु का एक महत्वपूर्ण पहलू यह भी है कि यह टिहरी गढ़वाल और पौड़ी गढ़वाल जिलों को जोड़ने वाला प्रमुख संपर्क मार्ग बनेगा। पुल के मध्य भाग में दोपहिया वाहनों के लिए मार्ग बनाया गया है, जबकि दोनों ओर पैदल यात्रियों के लिए अलग रास्ते हैं। इसके अलावा पुल पर आधुनिक लाइटिंग, सीसीटीवी कैमरे और आकर्षक सेल्फी पॉइंट्स बनाए जा रहे हैं, जो इसे पर्यटकों के लिए और भी आकर्षक बनाएंगे।

पर्यटन की दृष्टि से भी यह पुल अत्यंत महत्वपूर्ण साबित हो सकता है। ऋषिकेश पहले से ही योग, आध्यात्मिकता और साहसिक पर्यटन के लिए विश्वभर में प्रसिद्ध है। ऐसे में बजरंग सेतु जैसे आधुनिक आकर्षण शहर की पर्यटन छवि को और सुदृढ़ करेंगे। इससे न केवल पर्यटकों की संख्या बढ़ेगी, बल्कि स्थानीय बाजारों और छोटे व्यापारियों को भी आर्थिक लाभ मिलेगा। हालांकि यह भी आवश्यक है कि आधुनिकता के इस विकास के साथ–साथ प्राकृतिक संतुलन और सांस्कृतिक गरिमा का भी ध्यान रखा जाए। ऋषिकेश केवल पर्यटन का केंद्र नहीं, बल्कि आस्था और अध्यात्म की भूमि है। इसलिए विकास के हर कदम में पर्यावरण संरक्षण और सांस्कृतिक मूल्यों की रक्षा अनिवार्य है। यह पुल ऋषिकेश के नए युग का प्रतीक बनने जा रहा है। यह सेतु केवल दो तटों को नहीं, बल्कि अतीत और भविष्य, आस्था और आधुनिकता, तथा परंपरा और तकनीक को भी जोड़ने का कार्य करेगा। आने वाले समय में जब पर्यटक इस पारदर्शी कांच के पुल पर चलकर गंगा की धारा को निहारेंगे, तब उन्हें केवल एक रोमांचक अनुभव ही नहीं मिलेगा, बल्कि वे उस नवीन ऋषिकेश की झलक भी देखेंगे, जो अपनी आध्यात्मिक विरासत को संजोते हुए विकास की नई राह पर आगे बढ़ रहा है।

प्रस्तुति : प्रो. (डॉ.) के.एल. तलवाड़

शरम्याळी नौनी सैं उत्तराखंडी सिनेमा की दमदार नायिका तलक :

शिवानी भंडारी कु प्रेरणादायक अभिनय-सफर

उपलब्धि

ऋषिकेश की पावन भूमि, लक्ष्मण झूला तपोवन की गलियाँ और टिहरी गढ़वाल की सांस्कृतिक माटी—यखें बटि जनम लिंदी एक यन कहानी, जु सपनों, संघर्ष और आत्मविश्वास कु मिसाल बणि ग्यै छ। य कहानी छ शिवानी भंडारी की —एक यन कलाकार जिनन शर्म, डर और संकोच तैं पाछै छोड़कै अभिनय तैं अपणू जीवन बणै और आज उत्तराखंड सिनेमा की पहचान बणि ग्यै छन। सरकारी स्कूल मा पढ़यैं एक शर्मीली—सि छात्रा, जैन मंच पर डायलॉग ब्वालण मा घबराहट होंदी थौ, व्है शिवानी आज कैमरे का सामणि आत्मविश्वास की प्रतिमूर्ति छन। स्कूल का साइंस ड्रामा न उनरा भीतर छिपी कलाकार तैं पैली बेर आवाज देई। दसवीं कक्षा मा आखिर अवसर समझिकै उनन हिम्मत जुटाई—और मंच पर यन प्रदर्शन करयू कि राज्य स्तर तक जीत कु झंडा फहराई देयूं। यै व मोड़ थौ, जौं उनरा गुरुजनों न उन तैं आईना दिखै—"तुम अभिनय कु बणि छा।" य वाक्य शिवानी का जीवन कु मंत्र बणि ग्यौ।

मुंबई बटि गढ़वाल तक : सीख, संघर्ष और पहचान

2016 मा बारहवीं का बाद अभिनय सीखण कु अवसर मिल्यूं। परिवार कु भरोसा दगड़ि थौ—और किस्मत न भी दस्तक देई। मुंबई मा पैलू ऑडिशन, पैलू चयन और पैलू कैमरा फेस—यखैं बटि धारावाहिकों मा किरदार, कैमियो और फिर लीड रोल तक कु सफर शुरू ह्वै। सावधान इंडिया और क्राइम पेट्रोल जसा लोकप्रिय शो मा मजबूत भूमिकाएं निभाईं, कैटलॉग शूट करिन—और दगड़ि—दगड़ि पढ़ाई भी पूरी करी।

गढ़वाली सिनेमा मा उनरू पैलू कदम केवल संयोग नी, बल्क प्रतिभा कु स्वीकृति थौ। 17 साल की उम्र मा बोड़ीगी कु गंगा न उन तैं स्थानीय सिनेमा मा स्थापित करयू। पढ़ाई और मुंबई का काम का कारण कुई बगत गढ़वाल से दूरी रै, पर कोविड का बाद वापसी न मनौं किस्मत कु दरवाजा फिर से खोली देयूं।

उत्तराखंड मा नई उड़ान

उत्तराखंड लौटकैं एल्बम से शुरूवात, फिर फिल्में और देखदा ही देखदा एक का बाद एक मजबूत किरदार। थोकदार कुण मिल्यौं युका अवार्ड, जैन उनरी मेहनत पर मुहर लगाई। या का बाद जय मां धारी देवी, पहाड़ी रत्न श्री देव सुमन (दुबारा यूका अवार्ड), प्रधानजी, पितृकुड़ा, दादी कु बक्सा, संस्कार और फिर व फिल्म जैन उन तैं अलग पहचान देई—कारा एक प्रथा। य फिल्म का किरदार न साबित करयू कि शिवानी केवल अभिनय नी करदीं, व्व किरदार जींदीं।

संगीत की दुन्या मा भी मजबूत मौजूदगी

फिल्मां का दगड़ि— दगड़ि म्यूजिक इंडस्ट्री मा भी शिवानी कु सफर उथैं ही प्रभावशाली रै। नरेंद्र सिंह नेगी कु बांद बिजोरा, प्रीतम भरतवाण कु जड़वान (चला समधनी), प्रह्लाद मेहरा कु मेरी समधनी—इन गीतों न उन तैं घर— घर पौंछाई देयूं। सैकड़ों एल्बम और 11—12 फीचर फिल्मों का दगड़ि वे आज उत्तराखंड की सबसे सक्रिय फीमेल लीड एक्ट्रेस मा गिणी जांदीं छन।

फार्मासिस्ट से फुल—टाइम एक्टर तक

अभिनय का दगड़ि फार्मेसी की पढ़ाई पूरी कर शिवानी न य दिखै कि सपने और शिक्षा दगड़ि—दगड़ि चल सकदन। पर जब मन न मंच चुन्यूं, त हॉस्पिटल की नौकरी पाछै छूटी ग्यै किलैकि उत्तराखंड की माटी, उनरा मनखी और उनरी कहानियां उन तैं पुकारणा छाई।

भविष्य की तैयारी

बीरा फिल्म मा बीरा कु किरदार और औंण वाली फिल्मों की तैयारी य बतांद कि शिवानी भंडारी कु सफर अबि जारी छ। मुंबई की कॉल्स का बावजूद उन जवाब साफ छ 'अबि मी अपणा उत्तराखंड कुण काम करणा छू।'

य केवल एक अभिनेत्री की कहानी नी, बल्क व विश्वास की कहानी छ कि जब तुम अपणी जड़ों से जुड़या रौंदा, त तुमरी पहचान और भी मजबूत होंदी। शिवानी भंडारी आज उत्तराखंड सिनेमा की उम्मीद, मेहनत और ईमानदार अभिनय कु चेहरा छनकृऔर औंण वालू बगत उनरा नाम और काम तैं और ऊँचाइयों तक लै जालू।

प्रस्तुति : अंकित तिवारी, उपसंपादक

दिव्यकला मेला : प्रतिभा, आत्मनिर्भरता और समावेशी भारत का उत्सव

जब अवसर मिलता है, तो दिव्यांगजन भी रचते हैं सफलता की नई कहानी

भारत विविधताओं, परंपराओं और सांस्कृतिक समृद्धि का देश है। यहाँ कला, संस्कृति और लोकजीवन की जड़ें इतनी गहरी हैं कि हर क्षेत्र अपनी विशिष्ट पहचान के साथ देश की सांस्कृतिक धरोहर को समृद्ध करता है। लोकगीत, लोकवाद्य, हस्तशिल्प, बुनकरी, लोककला और पारंपरिक शिल्प भारत की सांस्कृतिक पहचान के प्रमुख स्तंभ हैं। इसी सांस्कृतिक विरासत को समावेशी दृष्टि से आगे बढ़ाने की दिशा में भारत सरकार द्वारा एक महत्वपूर्ण पहल की गई है—दिव्यकला मेला। दिव्यकला मेला केवल एक प्रदर्शनी या व्यापारिक आयोजन नहीं है, बल्कि यह दिव्यांगजनों की प्रतिभा, आत्मनिर्भरता और आत्मविश्वास का उत्सव है। यह मेला उन दिव्यांग कलाकारों, कारीगरों और उद्यमियों के लिए एक सशक्त मंच प्रदान करता है, जो अपनी मेहनत और सृजनशीलता से समाज में नई पहचान बना रहे हैं।

भारत सरकार द्वारा दिव्यांगजनों को सक्षम, आत्मनिर्भर और समाज की मुख्यधारा में शामिल करने के लिए समय—समय पर अनेक योजनाएँ और कार्यक्रम चलाए जाते रहे हैं। इन्हीं प्रयासों की श्रृंखला में दिव्यकला मेला एक अनूठी पहल के रूप में सामने आया है। यह मेला देश के विभिन्न हिस्सों से आए दिव्यांग कलाकारों, बुनकरों तथा छोटे स्तर पर व्यवसाय कर रहे दिव्यांगजनों को अपनी कला और उत्पादों को प्रदर्शित करने का अवसर देता है। यह आयोजन समाज को यह संदेश भी देता है कि दिव्यांगजन किसी भी दृष्टि से कमतर नहीं हैं। यदि उन्हें अनुकूल वातावरण, अवसर और प्रोत्साहन मिले, तो वे भी अपनी प्रतिभा से समाज में प्रेरणा का स्रोत बन सकते हैं।

दिव्यकला मेले का परिचय

दिव्यकला मेला राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित होने वाला एक सामाजिक और सांस्कृतिक आयोजन है, जिसमें दिव्यांग कलाकारों और शिल्पकारों को अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने का अवसर मिलता है। इस मेले में चित्रकला, मूर्तिकला, हस्तशिल्प, गृह सज्जा की वस्तुएँ, वस्त्र और हाथकरघा उत्पाद, पैकबंद और जैविक खाद्य सामग्री, खिलौने, उपहार सामग्री, व्यक्तिगत आभूषण तथा परिधान सामग्री जैसी विविधताओं का अद्भुत संगम देखने को मिलता है। यह आयोजन केवल एक मेला नहीं, बल्कि समाज के लिए एक प्रेरणादायक संदेश है कि दिव्यांगजन भी अपनी प्रतिभा और कौशल के बल पर आत्मनिर्भर बन सकते हैं। यह मेला दिव्यांग

कारीगरों और उद्यमियों को अपने उत्पादों के प्रदर्शन और विपणन का व्यापक मंच प्रदान करता है, जिससे उनके आर्थिक सशक्तिकरण को नई दिशा मिलती है।

दिव्यकला मेले के आयोजन का उद्देश्य

देश के विभिन्न शहरों में आयोजित होने वाले दिव्यकला मेले का उद्देश्य केवल उत्पादों की बिक्री तक सीमित नहीं है, बल्कि इसका लक्ष्य दिव्यांगजनों को समाज की मुख्यधारा से जोड़ना है। इस मेले के माध्यम से दिव्यांग कलाकारों को समाज में उचित स्थान दिलाने का प्रयास किया जाता है। साथ ही उन्हें आत्मनिर्भर और स्वावलंबी बनने के लिए प्रेरित किया जाता है। यह आयोजन समाज में दिव्यांगजनों के प्रति सम्मान और समावेशन की भावना को मजबूत करता है। इसके अतिरिक्त यह मंच दिव्यांगजनों के उत्पादों को समाज में पहचान दिलाने, उनकी प्रतिभा को व्यापक स्तर पर प्रस्तुत करने और उनके आत्मविश्वास को बढ़ाने का भी महत्वपूर्ण माध्यम बनता है। आर्थिक सशक्तिकरण की दिशा में भी यह मेला एक प्रभावी पहल है।

दिव्यकला मेले की शुरुआत

दिव्यकला मेले की शुरुआत केंद्रीय सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय के अंतर्गत आने वाले दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग द्वारा की गई। इसका पहला आयोजन 2 से 7 दिसंबर 2022 के बीच दिल्ली में हुआ। यह पहल "वोकल फॉर लोकल" की भावना को भी सशक्त बनाती है। इसके बाद देश के अनेक राज्यों और शहरों में दिव्यकला मेलों का सफल आयोजन किया गया है। अब तक लगभग 30 दिव्यकला मेलों का आयोजन राष्ट्रीय दिव्यांगजन विकास एवं वित्त निगम (एनडीएफडीसी), जिसे पहले एनएचएफडीसी के नाम से जाना जाता था, तथा स्थानीय प्रशासन के सहयोग से किया जा चुका है। हाल ही में 30वाँ दिव्यकला मेला देहरादून में आयोजित किया गया, जिसमें देशभर से आए दिव्यांग कलाकारों और उद्यमियों ने अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। इस मेले में रंग–बिरंगे वस्त्रों के स्टॉल, हस्तशिल्प की सुंदर कलाकृतियाँ, स्वादिष्ट खाद्य पदार्थों के स्टॉल तथा सजावटी वस्तुओं की आकर्षक प्रदर्शनी देखने को मिलती है।देहरादून में आयोजित इस नौ दिवसीय मेले में लगभग 90 स्टॉल लगाए गए। जिनमें 16 राज्यों व केंद्र शासित प्रदेशों से आए 100 से अधिक दिव्यांग कारीगरों, कलाकारों और उद्यमियों ने भाग लिया। मेले में हस्तशिल्प, हथकरघा, कढ़ाई, होम डेकोर, वस्त्र, ऑर्गेनिक खाद्य उत्पाद, आभूषण, खिलौने और उपहार सामग्री सहित विविध उत्पाद उपलब्ध थे। इसके साथ ही "दिव्य कला शक्ति" कार्यक्रम के माध्यम से स्थानीय दिव्यांग कलाकारों को गायन, वादन और नृत्य की रंगारंग प्रस्तुतियाँ देने का अवसर भी प्रदान किया जाता है।

दिव्यकला में भाग लेने की प्रक्रिया

दिव्यकला मेला दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग के अंतर्गत आने वाले स्वायत्त संस्थान राष्ट्रीय दिव्यांगजन विकास एवं वित्त निगम (एनडीएफडीसी) द्वारा आयोजित किया जाता है। इसमें भाग लेने के लिए कम से कम 40 प्रतिशत दिव्यांगता का प्रमाण और यूडीआईडी कार्ड होना आवश्यक है। मेले में स्टॉल प्राप्त करने के लिए एनडीएफडीसी द्वारा निर्धारित प्रक्रिया को पूरा करना होता है। चयनित दिव्यांग प्रतिभागियों को स्टॉल निःशुल्क प्रदान किए जाते हैं और उन्हें कई प्रकार की सुविधाएँ भी उपलब्ध कराई जाती हैं, जिससे वे बिना किसी कठिनाई के अपने उत्पादों का प्रदर्शन और विक्रय कर सकें। इसके अतिरिक्त इस मेले में रोजगार मेले का भी आयोजन किया जाता है, जिसमें स्थानीय उद्यमियों और कंपनियों के सहयोग से दिव्यांगजनों को रोजगार उपलब्ध कराने का प्रयास किया जाता है। साथ ही भारतीय पुनर्वास परिषद द्वारा

मान्यता प्राप्त सीआरई कार्यक्रम, विभिन्न राष्ट्रीय दिव्यांगजन सशक्तिकरण संस्थानों और क्षेत्रीय पुनर्वास केंद्रों के स्टॉल भी लगाए जाते हैं। इनके माध्यम से दिव्यांगजनों को शिक्षा, व्यावसायिक प्रशिक्षण, आधुनिक तकनीक तथा सरकारी योजनाओं की जानकारी प्रदान की जाती है।

दिव्यकला मेले की प्रमुख उपलब्धियाँ

दिव्यकला मेला दिव्यांगजनों के लिए कई महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ लेकर आया है। यह मंच उन्हें अपनी प्रतिभा और कौशल को समाज के सामने प्रस्तुत करने का अवसर देता है। यहाँ दिव्यांगजन हस्तशिल्प, सजावटी सामान, कपड़े, आभूषण, खिलौने, पेंटिंग और घरेलू उपयोग की वस्तुएँ बेचकर आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनते हैं। यह मेला स्वरोजगार और उद्यमिता की भावना को भी प्रोत्साहित करता है तथा उनके उत्पादों को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय बाजार से जोड़ने का अवसर प्रदान करता है। साथ ही यह आयोजन समाज में दिव्यांगजनों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करता है और उन्हें समाज की मुख्यधारा में स्थान दिलाने का कार्य करता है।

अपने हुनर की सराहना मिलने से उनका आत्मविश्वास बढ़ता है और उनके व्यक्तित्व का विकास होता है। इसके अतिरिक्त इस मेले में पारंपरिक हस्तशिल्प, लोककला और स्थानीय कलाओं का प्रदर्शन भारतीय संस्कृति के संरक्षण और प्रसार को भी नई ऊर्जा प्रदान करता है। साथ ही यह मंच दिव्यांग उद्यमियों को सरकारी योजनाओं, सामाजिक संगठनों और गैर–सरकारी संस्थाओं से जोड़कर उन्हें अधिक अवसर और संसाधन उपलब्ध कराता है। आंकड़े जो सशक्तिकरण की कहानी कहते हैं। अब तक देश के 29 स्थानों पर आयोजित दिव्य कला मेलों में 2362 प्रतिभागियों ने भाग लिया और 23 करोड़ रूपये से अधिक का कारोबार हुआ। दिव्यांग उद्यमियों के लिए 20 करोड़ रूपये से अधिक के ऋण स्वीकृत किए गए हैं। रोजगार मेलों में 3131 प्रतिभागियों ने भाग लिया, जिनमें से 1007 शॉर्टलिस्ट हुए और 313 से अधिक को रोजगार प्रस्ताव प्राप्त हुए।

समावेशी समाज की ओर एक सशक्त कदम

दिव्यकला मेला केवल एक आयोजन नहीं, बल्कि समावेशी समाज की दिशा में उठाया गया एक महत्वपूर्ण कदम है। यह दिव्यांगजनों की प्रतिभा, आत्मशक्ति और आत्मनिर्भरता का प्रतीक बन चुका है। इस मंच के माध्यम से दिव्यांगजन यह सिद्ध कर रहे हैं कि शारीरिक सीमाएँ उनकी कल्पनाशक्ति, प्रतिभा और कार्यकुशलता को सीमित नहीं कर सकतीं। यदि उन्हें उचित अवसर और प्रोत्साहन मिले, तो वे समाज के विकास में समान रूप से योगदान दे सकते हैं।

आज आवश्यकता इस बात की है कि समाज दिव्यांगजनों की प्रतिभा को पहचानते हुए उनके उत्पादों और कलाकृतियों को प्रोत्साहित करे। इससे न केवल उनका आत्मविश्वास बढ़ेगा बल्कि "वोकल फॉर लोकल" की भावना को भी नई दिशा मिलेगी। विकसित भारत 2047 की कल्पना तभी साकार होगी जब समाज का प्रत्येक वर्ग विकास की धारा से जुड़े। इस दृष्टि से दिव्यकला मेला निश्चित ही एक ऐसी प्रेरणादायी पहल है, जो दिव्यांगजनों को सम्मान, अवसर और आत्मनिर्भरता के साथ नए भारत के निर्माण में सहभागी बना

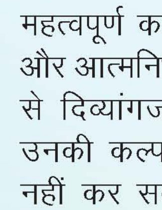

प्रस्तुति
भारती तिवारी, छात्रा, विशेष शिक्षा विभाग
उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय,हल्द्वानी

प्रयोगशाला में वैज्ञानिक और घर में आस्थावान

वैज्ञानिक जीवन पर एक सौम्य व्यंग्य

■ डॉ.बृजमोहन शर्मा

राष्ट्रीय विज्ञान दिवस (28 फरवरी) के दिन संदेश इलेक्ट्रॉनों से भी तेज गति से प्रवाहित हो रहे हैं। सोशल मीडिया पर वैज्ञानिक दृष्टिकोण की प्रशंसा से भरे हुए संदेश दिखाई दे रहे हैं। प्रयोगशालाएँ सजाई जा रही हैं, उपकरणों की तस्वीरें साझा की जा रही हैं और वैज्ञानिक, शोधकर्ता, विज्ञान सलाहकार तथा विज्ञान संचारक समाज को वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाने की प्रेरणा दे रहे हैं। हम प्रमाण, तर्क और विवेक की बात करते हैं। हम प्रश्न पूछने की महत्ता बताते हैं। हम विज्ञान का उत्सव मनाते हैं।

परंतु समाज को सलाह देने से पहले, विज्ञान का उत्सव मनाने से पहले, और वैज्ञानिक दृष्टिकोण पर भाषण देने से पहले, एक असुविधाजनक किंतु आवश्यक प्रश्न हमें स्वयं से पूछना चाहिए, क्या हम, विज्ञान से जुड़े लोग, वास्तव में अपने दैनिक जीवन में विज्ञान का पालन करते हैं? क्या वैज्ञानिक, शोधकर्ता और विज्ञान के मार्गदर्शक वही सिद्धांत,अवलोकन, मापन, सत्यापन और प्रमाण अपने घरों में भी अपनाते हैं, जिन्हें वे प्रयोगशालाओं और कक्षाओं में सिखाते हैं? या विज्ञान केवल एक पेशेवर उपकरण बनकर रह गया है, जिसका उपयोग हम कार्यस्थल पर करते हैं, परंतु घर पर उसे सम्मानपूर्वक अनदेखा कर देते हैं? वैज्ञानिक रूप से बोलना आसान है। वैज्ञानिक रूप से पढ़ाना आसान है। पर क्या हम वैज्ञानिक रूप से जीते हैं?

आइए एक सरल प्रश्न से आरंभ करें। क्या आपके घर में लैक्टोमीटर है? प्रयोगशालाओं में वैज्ञानिक द्रवों का घनत्व अत्यंत सटीकता से मापते हैं। वे सूक्ष्मतम अंतर को पहचान सकते हैं। वे किसी भी द्रव की शुद्धता और संरचना का निर्धारण कर सकते हैं। परंतु जो दूध प्रतिदिन उनके घर आता है क्या वे उसकी जाँच करते हैं? या विज्ञान प्रयोगशाला के द्वार पर ही रुक जाता है? क्या वह दूध वास्तव में दूध है या केवल पानी का एक परिष्कृत रूप ? वैज्ञानिक अज्ञात नमूनों पर संदेह करते हैं, पर परिचित नमूनों पर विश्वास कर लेते हैं।

घी, तेल और मसालों पर विचार कीजिए। वैज्ञानिक जानते हैं कि वसा की संरचना क्या होती है, ऑक्सीकरण कैसे होता है, और मिलावट कैसे स्वास्थ्य को प्रभावित करती है। वे जानते हैं कि हल्दी, मिर्च और अन्य मसालों में कृत्रिम रंग और हानिकारक पदार्थ मिलाए जा सकते हैं। पर क्या वे अपने घर के घी की जाँच करते हैं? क्या वे अपने तेल की शुद्धता सुनिश्चित करते हैं? या पैकेट पर लिखा हुआ नाम ही प्रमाण बन जाता है?अपने सिर के ऊपर देखिए। एलईडी बल्ब जल रहा है। क्या आपको उसका वास्तविक वाट ज्ञात है? या आप केवल पैकेट पर लिखे हुए अंक पर विश्वास करते हैं? वैज्ञानिक ऊर्जा संरक्षण और दक्षता पर व्याख्यान देते हैं। वे सतत विकास की बात करते हैं। पर क्या उनके अपने घर ऊर्जा दक्षता का उदाहरण हैं ? क्या वे ऊर्जा दक्ष उपकरणों का उपयोग करते हैं ? क्या वे सौर ऊर्जा अपनाते हैं ? या नवीकरणीय ऊर्जा केवल एक चर्चा का विषय है, जीवन का हिस्सा नहीं ?

अपने घर की खिड़कियों और फर्नीचर को देखिए। क्या आपने कभी स्क्रू गेज या वर्नियर कैलिपर से काँच की मोटाई मापी है ? क्या आपको पता है कि आपका प्लाइबोर्ड कितना मजबूत और सुरक्षित है ? विज्ञान हमें मापन सिखाता है। पर क्या हम अपने ही वातावरण को मापते हैं ? पानी पर विचार करें ! आज अधिकांश घरों में जल शोधक (वॉटर फिल्टर) हैं। पर क्या आपको उसे कैलिब्रेट करना आता है ? क्या आपको पता है कि आपका पानी वास्तव में कितना शुद्ध है ? क्या आपने कभी उसका टीडीएस मापा है ? वैज्ञानिक उपकरणों की सटीकता पर जोर देते हैं। पर क्या वे अपने घर के उपकरणों की सटीकता सुनिश्चित करते हैं ? अपने रेफ्रिजरेटर के बारे में सोचिए। क्या आपको उसका वास्तविक तापमान ज्ञात है ? क्या वह भोजन को सुरक्षित रखने के लिए पर्याप्त है ? वैज्ञानिक सूक्ष्मजीवों और उनके विकास के बारे में जानते हैं। पर क्या वे अपने भोजन की सुरक्षा को वैज्ञानिक रूप से सुनिश्चित करते हैं ? दवाइयों पर विचार करें। क्या आप उनकी समाप्ति तिथि (एक्सपायरी डेट) ध्यान से देखते हैं ? या विश्वास ही आपका प्रमाण है ? अपने वाहन के टायरों के वायु दाब के बारे में सोचिए। भौतिकी हमें दाब और दक्षता के सिद्धांत सिखाती है। पर क्या हम अपने ही जीवन में भौतिकी का पालन करते हैं ? अपने घर के वायु और प्रकाश के बारे में सोचिए। क्या आपके घर में पर्याप्त वेंटिलेशन और सूर्य प्रकाश है ? या हम बंद कमरों में रहते हुए पर्यावरण संरक्षण की बातें करते हैं ? अपने भोजन की आदतों पर विचार करें। क्या आप किशमिश और छुहारे धोकर खाते हैं? क्या आप फलों को कीटनाशक अवशेष कम करने के लिए धोते या भिगोते हैं? वैज्ञानिक जानते हैं कि सूक्ष्मजीव और रसायन स्वास्थ्य को कैसे प्रभावित करते हैं। पर

....शेष पृष्ठ 25 पर

आयोजन

लोक भवन में तीन दिवसीय वसंतोत्सव-2026

प्रकृति, संस्कृति और आत्मनिर्भरता का समन्वित उत्सव

देहरादून में लोकभवन परिसर में आयोजित **'वसंतोत्सव – 2026'** ने इस वर्ष न केवल पुष्पों की सौंदर्य–छटा बिखेरी, बल्कि प्रकृति, स्वास्थ्य, संस्कृति और आत्मनिर्भरता के बहुआयामी समन्वय का एक जीवंत उदाहरण भी प्रस्तुत किया। लेफ्टिनेंट जनरल गुरमीत सिंह द्वारा दीप प्रज्ज्वलन के साथ प्रारंभ हुए इस तीन दिवसीय आयोजन ने जनसामान्य के बीच एक सकारात्मक ऊर्जा का संचार किया। इस अवसर पर 'भोज पत्र' विषय पर विशेष डाक आवरण का विमोचन तथा डाक टिकट प्रदर्शनी का उद्‌घाटन, हमारी प्राचीन ज्ञान परंपरा और सांस्कृतिक विरासत को आधुनिक संदर्भ में प्रस्तुत करने का सराहनीय प्रयास रहा।

फ्लोरल हीलिंगः प्रकृति के माध्यम से स्वास्थ्य की नई दृष्टि

इस वर्ष वसंतोत्सव की थीम 'फ्लोरल हीलिंग : नेचर्स पाथ टू वेल बीइंग' रही, जो अपने आप में एक नवीन और समसामयिक अवधारणा है। उद्यान विभाग द्वारा प्रस्तुत विभिन्न स्टॉलों में यह स्पष्ट किया गया कि पुष्प केवल सजावट का माध्यम नहीं, बल्कि मानसिक शांति, भावनात्मक संतुलन और शारीरिक स्वास्थ्य के लिए भी अत्यंत उपयोगी हैं। हिमालयी पुष्पों से बने खाद्य पदार्थों का प्रदर्शन और फ्लोरल थेरेपी की अवधारणा ने इस आयोजन को विशिष्ट बना दिया। राज्यपाल द्वारा 'अरोमा क्रांति' का उल्लेख इस दिशा में राज्य की संभावनाओं को रेखांकित करता है। उत्तराखण्ड की जैव–विविधता और प्राकृतिक संसाधन सुगंधित उत्पादों के माध्यम से वैश्विक बाजार में अपनी पहचान बना सकते हैं।

कला, संस्कृति और लोकजीवन का जीवंत मंच

वसंतोत्सव के सांस्कृतिक आयाम ने उत्तराखण्ड की लोक परंपराओं को जीवंत कर दिया। कुमाऊँनी, गढ़वाली, जौनसारी और थारू लोकगीतों एवं नृत्यों की प्रस्तुतियों ने दर्शकों को भावविभोर कर दिया। ''गोरख्या चेली भागुली'', ''मेरा बाजू रंगा रंग'', ''को देश को बटोई'' जैसे लोकगीतों के माध्यम से प्रदेश की सांस्कृतिक विविधता और लोकजीवन का सुंदर चित्रण सामने आया। दूसरे दिन प्रस्तुत 'चांचरी', 'हारूल',

'बाजूबंद' जैसे लोकनृत्य तथा केदारघाटी मंचन समिति द्वारा प्रस्तुत नाटक "चक्रव्यूह" ने दर्शकों को गहरे तक प्रभावित किया। यह आयोजन न केवल मनोरंजन का माध्यम रहा, बल्कि सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण और संवर्धन का सशक्त मंच भी बना।

युवा, महिलाएं और आत्मनिर्भरता का सशक्त संदेश

इस आयोजन का एक महत्वपूर्ण पक्ष महिला स्वयं सहायता समूहों, युवाओं और स्टार्टअप्स की सक्रिय भागीदारी रही। शहद, मिलेट्स, अरोमा उत्पाद और पारंपरिक खाद्य पदार्थों के स्टॉलों ने स्थानीय उत्पादों की उपयोगिता और संभावनाओं को उजागर किया। राज्यपाल ने इन प्रयासों की सराहना करते हुए स्पष्ट किया कि यदि इन उत्पादों को तकनीक और डिजिटलीकरण से जोड़ा जाए, तो ये वैश्विक बाजार में भी प्रतिस्पर्धा कर सकते हैं। पेंटिंग प्रतियोगिता में सैकड़ों छात्रों की भागीदारी, वुशु और रिदमिक योग के प्रदर्शन तथा दिव्यांगजनों की सहभागिता ने इस उत्सव को समावेशी और प्रेरणादायी बना दिया।

प्रतियोगिताएं, नवाचार और व्यापक जनभागीदारी

वसंतोत्सव–2026 में 15 श्रेणियों की 50 से अधिक उपश्रेणियों में 2300 से अधिक प्रतिभागियों की भागीदारी इस आयोजन की व्यापकता को दर्शाती है। पुष्प प्रदर्शनी, रंगोली, फोटोग्राफी, शहद उत्पादन, बागवानी और हाइड्रोपोनिक्स जैसी प्रतियोगिताओं ने नवाचार और कौशल को मंच प्रदान किया। 343 स्टॉलों के माध्यम से विभिन्न संस्थानों, स्वयं सहायता समूहों और उत्पादकों ने अपने उत्पादों और गतिविधियों का प्रदर्शन किया। यह आयोजन किसानों और क्रेताओं के बीच समन्वय स्थापित करने का भी माध्यम बना, जिससे कृषि और बागवानी क्षेत्र को नई दिशा मिल सकती है।

लोकप्रियता और सफलता का नया मानक

तीन दिनों में लगभग साढ़े तीन लाख लोगों की सहभागिता इस आयोजन की लोकप्रियता और सफलता का प्रमाण है। समापन अवसर पर मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी द्वारा इसे उत्तराखण्ड की हरित अर्थव्यवस्था, प्राकृतिक संपदा और सांस्कृतिक समृद्धि का उत्सव बताया जाना इसकी व्यापकता को दर्शाता है। इस वर्ष की चल वैजयंती ट्रॉफी आईआईटी रुड़की को प्राप्त होना इस बात का संकेत है कि शैक्षणिक संस्थान भी नवाचार और रचनात्मकता के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। वसंतोत्सव–2026 केवल एक पुष्प प्रदर्शनी नहीं, बल्कि एक समग्र विकास मॉडल का प्रतीक बनकर उभरा है, जिसमें प्रकृति, संस्कृति, स्वास्थ्य, अर्थव्यवस्था और नवाचार का अद्भुत समन्वय देखने को मिला।

यह आयोजन यह संदेश देता है कि यदि विकास को प्रकृति के साथ संतुलित किया जाए, तो वह अधिक टिकाऊ, समावेशी और प्रभावी हो सकता है। उत्तराखण्ड जैसे प्राकृतिक और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध राज्य के लिए इस प्रकार के आयोजन न केवल पर्यटन को बढ़ावा देते हैं, बल्कि स्थानीय लोगों के लिए रोजगार, आत्मनिर्भरता और गर्व का आधार भी बनते हैं। वसंतोत्सव–2026 ने यह सिद्ध कर दिया कि जब परंपरा और आधुनिकता का संगम होता है, तो विकास की नई राहें स्वतः प्रशस्त हो जाती हैं।

प्रस्तुति : श्रीमती नीलम तलवाड़

पुरानी टिहरी की स्मृतियों की प्रदर्शनी
इतिहास, संस्कृति और संवेदनाओं का संगम

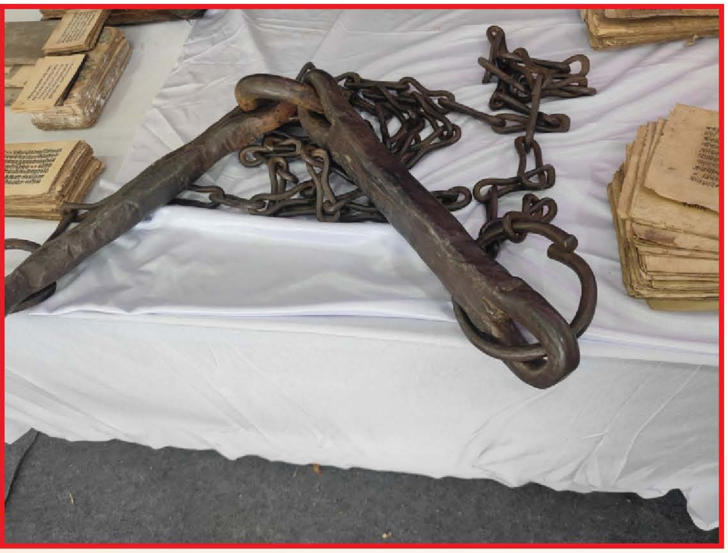

उत्तराखंड की धरती केवल प्राकृतिक सौंदर्य के लिए ही नहीं, बल्कि अपनी समृद्ध सांस्कृतिक और ऐतिहासिक विरासत के लिए भी जानी जाती है। इन्हीं विरासतों में एक महत्वपूर्ण नाम है टिहरी, जिसका पुराना शहर आज भले ही टिहरी झील की गहराइयों में समा चुका हो, लेकिन उसकी स्मृतियाँ आज भी लोगों के मन में जीवित हैं। इसी ऐतिहासिक स्मृति को जीवंत करने का प्रयास टिहरी झील महोत्सव 2026 'हिमालयन 02' के दौरान आयोजित विशेष प्रदर्शनी में देखने को मिला, जिसने आगंतुकों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया।

जनपद टिहरी गढ़वाल के कोटी कॉलोनी में आयोजित इस महोत्सव का वर्ष 2021 के बाद पुनः आयोजन हुआ। इस महोत्सव में पर्यटन, संस्कृति, परंपरा और इतिहास का अद्भुत संगम देखने को मिला। विशेष रूप से पुरानी टिहरी शहर की स्मृतियों को समर्पित प्रदर्शनी ने लोगों को अतीत की यात्रा पर ले जाने का कार्य किया। यह प्रदर्शनी केवल वस्तुओं का संग्रह नहीं थी, बल्कि वह उस जीवनशैली, संस्कृति और आस्था का प्रतीक थी, जो कभी पुरानी टिहरी की पहचान हुआ करती थी।प्रदर्शनी में पुराने टिहरी शहर के दुर्लभ चित्रों के माध्यम से उस नगर की भव्यता और सांस्कृतिक समृद्धि की झलक देखने को मिली। साथ ही प्राचीन मंदिरों की छवियाँ और उनसे जुड़ी आस्था की कहानियाँ भी प्रदर्शित की गईं। यह प्रदर्शन इस बात का सशक्त उदाहरण है कि समय के साथ भौतिक संरचनाएँ भले ही बदल जाएँ, किंतु उनकी स्मृतियाँ और उनसे जुड़ी भावनाएँ समाज की चेतना में सदैव जीवित रहती हैं। इस प्रदर्शनी की सबसे बड़ी विशेषता यह रही कि इसमें केवल चित्र ही नहीं, बल्कि पुरानी टिहरी की जीवनशैली से जुड़ी अनेक दुर्लभ वस्तुओं को भी सहेजकर रखा गया था। दक्षिण काली तलवार, चतुर्भुज नारायण से जुड़ी ऐतिहासिक सामग्री, प्राचीन पांडुलिपियाँ, पारंपरिक श्रृंगार बक्सा, लालटेन, सेर, पाथा, दो बत्तियों वाला लैंप, किताब स्टैंड तथा दक्षिण माता मंदिर परिसर टिहरी से प्राप्त चाण–बाण जैसी वस्तुएँ लोगों के लिए विशेष आकर्षण का केंद्र रहीं। इसके अतिरिक्त गंगा के गोल पत्थर से बनी गोलाकार ओखली और खोली का गणेश भी प्रदर्शनी में लोगों की उत्सुकता का विषय बने।इस प्रदर्शनी में विभिन्न मंदिरों के चित्र, पारंपरिक वाद्ययंत्र, राजा की पालकी सहित श्रीदेव सुमन जी को पहनाई गई बेड़ियां भी रखी गई हैं।

इन वस्तुओं के माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि पुरानी टिहरी का समाज केवल धार्मिक और सांस्कृतिक रूप से ही नहीं, बल्कि अपनी परंपरागत जीवनशैली और हस्तकला के कारण भी समृद्ध था। ये वस्तुएँ उस समय की सामाजिक संरचना, लोक जीवन और पारिवारिक परंपराओं की जीवंत गवाही प्रस्तुत करती हैं। आधुनिकता की तेज रफ्तार के बीच जब कई परंपराएँ धीरे–धीरे लुप्त होती जा रही हैं, तब ऐसी प्रदर्शनी नई पीढ़ी को अपनी जड़ों से जोड़ने का महत्वपूर्ण कार्य करती है। महोत्सव के दौरान आगंतुकों ने इस प्रदर्शनी का अवलोकन किया और इस प्रयास की सराहना की। यह सराहना केवल एक आयोजन की प्रशंसा नहीं है, बल्कि उस सोच का सम्मान है जो अपनी सांस्कृतिक विरासत को सहेजने के लिए प्रतिबद्ध है।आज आवश्यकता इस बात की है कि ऐसे प्रयास केवल महोत्सवों तक सीमित न रहें, बल्कि इन्हें स्थायी रूप दिया जाए। यदि पुरानी

टिहरी की स्मृतियों को इसी प्रकार संग्रहीत कर संग्रहालय या सांस्कृतिक केंद्र के रूप में विकसित किया जाए, तो यह न केवल इतिहास को संरक्षित करेगा बल्कि पर्यटन को भी नई दिशा देगा। इससे स्थानीय लोगों की भावनाएँ भी जुड़ी रहेंगी और आने वाली पीढ़ियाँ भी अपने अतीत से परिचित हो सकेंगी। पुरानी टिहरी केवल एक डूबा हुआ शहर नहीं है, बल्कि वह इतिहास, संस्कृति और भावनाओं का एक जीवंत अध्याय है। टिहरी झील महोत्सव में आयोजित यह प्रदर्शनी इस बात का प्रमाण है कि यदि संकल्प और संवेदनशीलता हो, तो इतिहास की स्मृतियों को समय की धारा में बहने से रोका जा सकता है। यह प्रदर्शनी हमें यह संदेश देती है कि विकास के साथ-साथ अपनी सांस्कृतिक जड़ों को सहेजना भी उतना ही आवश्यक है। क्योंकि जिस समाज को अपने अतीत का ज्ञान और सम्मान होता है, वही भविष्य की मजबूत नींव रख सकता है।

प्रस्तुति-
आशा रणाकोटी
ग्राम पंचायत विकास अधिकारी
चंबा ब्लॉक, टिहरी गढ़वाल
पंचायतीराज विभाग, उत्तराखंड

पृष्ठ 21 का शेष....

क्या वे इस ज्ञान का उपयोग अपने जीवन में करते हैं ? अपने बच्चों के बारे में सोचिए। क्या आप छोटे बच्चों को मोबाइल से दूर रखते हैं ? विज्ञान स्पष्ट रूप से बताता है कि अत्यधिक स्क्रीन समय बच्चों के मस्तिष्क के विकास को प्रभावित करता है। पर क्या हम इस विज्ञान का पालन करते हैं ? अपने शरीर के बारे में सोचिए। क्या आप नियमित रूप से अपने रक्तचाप, रक्त शर्करा और स्वास्थ्य की जाँच करते हैं ? विज्ञान हमें रोकथाम के साधन देता है। पर क्या हम उनका उपयोग करते हैं ? विडंबना गहरी है। हम दूरस्थ तारों को मापते हैं, पर अपने दूध की शुद्धता नहीं मापते। हम जटिल अणुओं का विश्लेषण करते हैं, पर अपने भोजन का नहीं। हम ऊर्जा के सिद्धांत पढ़ाते हैं, पर अपने घर में ऊर्जा बचत नहीं करते। हम विज्ञान सिखाते हैं, पर उसे जीते नहीं। हम स्वयं को विज्ञान का विद्यार्थी, शोधकर्ता और मार्गदर्शक कहते हैं। पर क्या हम विज्ञान के साधक हैं ? विज्ञान केवल एक डिग्री नहीं है। विज्ञान केवल एक पद नहीं है। विज्ञान केवल एक भाषण नहीं है। विज्ञान एक आदत है। विज्ञान एक अनुशासन है। विज्ञान एक जीवन शैली है।सच्चा वैज्ञानिक वह नहीं है जो केवल ज्ञान खोजता है, बल्कि वह है जो ज्ञान को अपने जीवन में उतारता है। विज्ञान प्रयोगशाला के लिए नहीं, जीवन के लिए है। विज्ञान रसोई के लिए है। विज्ञान घर के लिए है। विज्ञान दैनिक जीवन के लिए है। अन्यथा, राष्ट्रीय विज्ञान दिवस केवल एक उत्सव बनकर रह जाएगा। एक परिवर्तन नहीं। और वैज्ञानिक केवल पेशे से वैज्ञानिक रह जाएगा-जीवन से नहीं। शायद सबसे शक्तिशाली वैज्ञानिक उपकरण माइक्रोस्कोप या टेलीस्कोप नहीं है। सबसे शक्तिशाली उपकरण है। एक प्रश्न करने वाला मन। और सबसे महत्वपूर्ण प्रयोग प्रयोगशाला में नहीं, बल्कि इस बात में है कि हम अपने जीवन को कितना वैज्ञानिक बनाते हैं।

प्रस्तुति - डॉ.बृज मोहन शर्मा,
राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त
विज्ञान संप्रेषक एवं नवोन्मेषक

जनऔषधि दवाओं को बढ़ावा देने पर

एम्स ऋषिकेश को मिला राष्ट्रीय सम्मान

भारत जैसे विशाल और विविधतापूर्ण देश में स्वास्थ्य सेवाओं की सुलभता और किफायत हमेशा एक बड़ी चुनौती रही है। आम नागरिक के लिए दवाओं का खर्च अक्सर इलाज की राह में सबसे बड़ी बाधा बन जाता है। ऐसे में केंद्र सरकार द्वारा शुरू की गई प्रधानमंत्री भारतीय जन औषधि परियोजना देश के स्वास्थ्य तंत्र को अधिक सुलभ और किफायती बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल साबित हो रही है।

हाल ही में जन औषधि केन्द्रों के माध्यम से दवाओं की उत्कृष्ट बिक्री और जनहित में उल्लेखनीय योगदान के लिए एम्स ऋषिकेश को सम्मानित किया जाना इस योजना की सफलता का प्रमाण है। नई दिल्ली के भारत मंडपम में आयोजित 8वें जन औषधि दिवस सम्मान समारोह में केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री जेपी नड्डा द्वारा यह पुरस्कार प्रदान किया गया। यह सम्मान केवल एक संस्थान की उपलब्धि नहीं, बल्कि उस सोच का प्रतीक है जो स्वास्थ्य सेवा को आम नागरिक की पहुंच में लाने का प्रयास कर रही है।जन औषधि योजना का मूल उद्देश्य लोगों को किफायती कीमतों पर गुणवत्तापूर्ण जेनेरिक दवाएं उपलब्ध कराना है। आज देशभर में 18 हजार से अधिक जन औषधि केंद्र संचालित हो रहे हैं, जहां से लाखों लोग सस्ती दवाओं का लाभ उठा रहे हैं। यह योजना विशेष रूप से उन परिवारों के लिए वरदान साबित हुई है, जिनकी आय सीमित है और जिनके लिए महंगी दवाएं खरीदना कठिन होता है। हालांकि, समाज में अभी भी जेनेरिक दवाओं को लेकर कुछ भ्रांतियां मौजूद हैं। कई लोग यह मान लेते हैं कि सस्ती दवाएं कम प्रभावी होती हैं, जबकि वैज्ञानिक रूप से यह धारणा बिल्कुल गलत है। विशेषज्ञों के अनुसार, जेनेरिक दवाएं गुणवत्ता और प्रभावशीलता के मामले में ब्रांडेड दवाओं के समान ही होती हैं। एम्स ऋषिकेश की कार्यकारी निदेशक प्रो. मीनू सिंह ने भी इस भ्रम को दूर करने पर बल दिया और बताया कि जागरूकता बढ़ाना इस योजना की सफलता के लिए अत्यंत आवश्यक है।एम्स ऋषिकेश द्वारा उत्तराखंड के सुदूर पर्वतीय क्षेत्रों तक दवाओं की पहुंच सुनिश्चित करने के लिए ड्रोन मेडिकल सेवा का उपयोग किया जाना स्वास्थ्य सेवाओं में नवाचार का उत्कृष्ट उदाहरण है। यह पहल दिखाती है कि आधुनिक तकनीक के माध्यम से दुर्गम क्षेत्रों तक भी सस्ती और गुणवत्तापूर्ण दवाएं पहुंचाई जा सकती हैं। यदि जन औषधि योजना की उपयोगिता पर दृष्टि डालें, तो यह स्पष्ट होता है कि जन औषधि केन्द्रों के माध्यम से आम जनता को गुणवत्तापूर्ण दवाएं अत्यंत किफायती कीमतों पर उपलब्ध हो रही हैं, जिससे मरीजों के इलाज का आर्थिक बोझ काफी हद तक कम हुआ है। उन्होंने बताया कि एम्स ऋषिकेश का जन औषधि केन्द्र लगातार लोगों को जेनेरिक दवाओं के प्रति जागरूक करने के साथ–साथ जरूरतमंद मरीजों तक सस्ती दवाएं पहुंचाने के लिए प्रतिबद्ध है।स्पष्ट है कि जन औषधि योजना केवल दवाएं उपलब्ध कराने की पहल नहीं है, बल्कि यह स्वास्थ्य सेवाओं में समानता और सामाजिक न्याय की दिशा में एक बड़ा कदम है। यदि इस योजना के प्रति जागरूकता और जनभागीदारी बढ़ती रही, तो आने वाले समय में भारत का स्वास्थ्य तंत्र और अधिक मजबूत तथा समावेशी बन सकता है।

प्रस्तुति –
प्रो.(डॉ.) पुनीत धमीजा
आचार्य, औषधि विज्ञान विभाग,
एम्स ऋषिकेश

नवाचार

प्रज्ञानम्-परंपरा से तकनीक तक, ज्ञान का नवोदय

लोक भवन में महामहिम राज्यपाल लेफ्टिनेंट जनरल गुरमीत सिंह द्वारा श्रीदेव सुमन उत्तराखण्ड विश्वविद्यालय के 'प्रज्ञानम्' एआई चैटबॉट का लोकार्पण 25 मार्च को किया गया। 'प्रज्ञानम्'—नाम ही अपने आप में ज्ञान की उस ज्योति का बोध कराता है, जो अज्ञान के अंधकार को दूर करती है। यह एआई चैटबॉट भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) को आधुनिक तकनीक के साथ जोड़ने का एक अभिनव प्रयास है। वेद, उपनिषद, पुराण, प्राचीन भारतीय गणित, नाट्यशास्त्र, संगीत, आयुर्वेद, दर्शन एवं भारतीय विज्ञान जैसे गहन विषयों पर आधारित इसका विस्तृत डेटाबेस इसे केवल एक तकनीकी उपकरण नहीं, बल्कि एक जीवंत ज्ञानकोष बनाता है। आज के तीव्र गति से बदलते डिजिटल युग में, जहाँ सूचना की प्रचुरता है परंतु प्रमाणिकता का संकट भी उतना ही गहरा है, 'प्रज्ञानम्' इस चुनौती का समाधान प्रस्तुत करता है। यह चैटबॉट उपयोगकर्ताओं को त्वरित, सटीक और संदर्भ—आधारित उत्तर प्रदान करता है, जिससे विद्यार्थी, शोधार्थी और आम नागरिक भारतीय ज्ञान परंपरा से जुड़ी विश्वसनीय जानकारी आसानी से प्राप्त कर सकते हैं।

इसकी ऑनलाइन उपलब्धता https://pragyanam-live पर इसे और अधिक सुलभ बनाती है। इस परियोजना की विशेषता इसका मजबूत शोध—आधार है। 'वन यूनिवर्सिटी—वन रिसर्च' पहल के अंतर्गत एक वर्ष तक चले गहन अध्ययन, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में हुए विमर्श तथा शोधपत्रों के संकलन ने इसे बौद्धिक रूप से समृद्ध बनाया है। इस दौरान दो महत्वपूर्ण पुस्तकों का निर्माण भी किया गया, जो इस परियोजना की गंभीरता और प्रतिबद्धता को दर्शाता है। महामहिम राज्यपाल ने अपने उद्बोधन में जिस बात पर बल दिया, वह आज के समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है। भारत की प्राचीन ज्ञान परंपरा केवल अतीत की विरासत नहीं, बल्कि वर्तमान और भविष्य की दिशा निर्धारित करने वाली शक्ति है। 'प्रज्ञानम्' ज्ञान को 21वीं सदी की भाषा में प्रस्तुत कर नई पीढ़ी तक पहुँचाने का कार्य करेगा। यह केवल जिज्ञासाओं का समाधान नहीं करेगा, बल्कि उपयोगकर्ताओं को शोध—आधारित, प्रमाणिक और गहन जानकारी प्रदान कर भारतीय ज्ञान की वास्तविक गहराई से परिचित कराएगा।

आज की युवा पीढ़ी तकनीक से गहराई से जुड़ी हुई है। ऐसे में 'प्रज्ञानम्' उनके लिए अपनी जड़ों, संस्कृति और आध्यात्मिक विरासत को समझने का एक आधुनिक माध्यम बन सकता है। महामहिम राज्यपाल एवं उच्च शिक्षामंत्री द्वारा श्रीदेव सुमन उत्तराखण्ड विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. एन.के. जोशी के इस अभिनव प्रयास और प्रस्तुतिकरण की मुक्तकण्ठ से सराहना की गई। लोकार्पण समारोह में संत समाज और शिक्षाविदों की गरिमामयी उपस्थिति ने इस पहल को और अधिक व्यापकता प्रदान की। सचिव राज्यपाल श्री रविनाथ रामन, विधि परामर्शी श्री कौशल किशोर शुक्ल, विभिन्न विश्वविद्यालयों के कुलपति—डॉ. परविंदर कौशल, प्रो. रमाकांत पाण्डेय, प्रो. अरुण कुमार त्रिपाठी तथा संत समाज के अनेक प्रतिष्ठित प्रतिनिधियों की उपस्थिति इस बात का प्रमाण है कि 'प्रज्ञानम्' केवल एक तकनीकी पहल नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक और आध्यात्मिक जागरण का भी प्रतीक है। 'प्रज्ञानम्' के लोकार्पण के अवसर पर श्रीदेव सुमन उत्तराखण्ड विश्वविद्यालय का सम्पूर्ण परिवार उत्साहपूर्वक उपस्थित रहा।

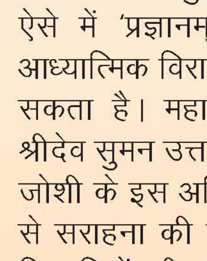

प्रस्तुति :
प्रो. जी.के. ढींगरा
निदेशक- शोध एवं विकास
प्रो. वनस्पति विज्ञान
प.ल. मो. शर्मा परिसर,
ऋषिकेश, श्रीदेव सुमन उत्तराखण्ड
विश्वविद्यालय

जीआरडी एजुकेशन ट्रस्ट के संस्थापक दृढ़ संकल्प व परिश्रम की मिसाल : सरदार राजा सिंह

TV Man of India

देहरादून के प्रसिद्ध उद्यमी राजा सिंह ओबेरॉय, जो प्रतिष्ठित टीवी ब्रांड टेक्सला टीवी के संस्थापक थे, का 28 फरवरी को लुधियाना में निधन हो गया। एक शरणार्थी बच्चे से लेकर भारत के सबसे प्रभावशाली इलेक्ट्रॉनिक्स निर्माताओं में से एक बनने तक का उनका सफर दृढ़ता, संघर्ष और उद्यमिता की प्रेरणादायक कहानी है। 1980 और 1990 के दशक में केबल टीवी के दौर में टेक्सला भारत के सबसे पहचाने जाने वाले टीवी ब्रांड्स में से एक बन गया। कंपनी के किफायती टीवी सेट्स ने खासकर दिल्ली और पंजाब में मध्यम वर्ग के परिवारों तक टेलीविजन को पहुंचाया। उस समय कई घरों में टेक्सला टीवी होना आम बात थी। राजा सिंह का जन्म 19 फरवरी 1936 को पाकिस्तान के वर्तमान रावलपिंडी जिले के हिलान गांव में हुआ था। भारत के विभाजन के समय उनका परिवार भारत आ गया। 11 साल की उम्र में उन्हें अपना घर छोड़ना पड़ा। दिल्ली में उन्होंने एक सब्जी विक्रेता के साथ मजदूरी से काम शुरू किया। औपचारिक शिक्षा न होने के बावजूद उनमें उद्यमशीलता की जबरदस्त भावना थी। 1961 में उन्होंने जुपिटर रेडियोज नाम से कंपनी शुरू की, जो सस्ते रेडियो और ट्रांजिस्टर बनाती थी। यह व्यवसाय तेजी से बढ़ा और हर साल लगभग 1.5 लाख रेडियो सेट बनने लगे।

1972 में उन्होंने टेक्सला के साथ टीवी बाजार में कदम रखा। शुरुआत में कंपनी ने लगभग 2,500 टीवी बनाए, लेकिन समय के साथ यह ब्रांड तेजी से बढ़ा और बाजार में प्रमुख स्थान बना लिया। 1988–89 तक टेक्सला हर साल लगभग 3 लाख ब्लैक एंड व्हाइट और कलर टीवी बनाने लगी। उनके बेटे इंदरजीत सिंह ओबेरॉय के अनुसार, एक समय टेक्सला का पंजाब के टीवी बाजार में लगभग 95 प्रतिशत हिस्सा था। उन्होंने 1979 में राजकमल इंडस्ट्रीज की स्थापना की, जो टीवी के लकड़ी के कैबिनेट बनाती थी। 1982 में टेक्सला ने रंगीन टीवी बनाना शुरू किया और उत्पादन क्षमता 50,000 यूनिट प्रति वर्ष थी। बाद में सस्ते ब्लैक एंड व्हाइट पोर्टेबल टीवी भी बनाए गए, जिससे आम लोगों तक तकनीक पहुंची। मांग बढ़ने पर लुधियाना में एक नई यूनिट स्थापित की गई, जिसकी क्षमता 2 लाख टीवी प्रति वर्ष थी। 1986 में उन्होंने मुलार्ड ट्यूब्स लिमिटेड की स्थापना की, जो पिक्चर ट्यूब बनाती थी। 1987 में बेस्टाविजन इलेक्ट्रॉनिक्स ने नोएडा में टीवी उत्पादन शुरू किया। 1988 में पटना में भी यूनिट लगाई गई। 1989 में टेक्सला को एक ही साल में 3 लाख टीवी बनाने पर राष्ट्रीय उत्पादकता पुरस्कार मिला। औपचारिक शिक्षा न होने के बावजूद राजा सिंह शिक्षा के महत्व को समझते थे। उन्होंने गुरु राम दास एजुकेशनल ट्रस्ट की स्थापना की, जो देहरादून के GRD इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एंड टेक्नोलॉजी और GRD अकादमी जैसे संस्थान चलाता है। उन्होंने 'सरब सांझी गुरबानी' पहल भी शुरू की, जो गुरु ग्रंथ साहिब की शिक्षाओं को ऑडियो–वीडियो माध्यम से प्रचारित करती है। 1984 के सिख विरोधी दंगों के दौरान उन्होंने पीड़ितों की मदद की और रोजगार उपलब्ध कराया।

समय के साथ उनका परिवार अन्य क्षेत्रों में भी गया, जैसे प्लास्टिक निर्माण (टेक्सला प्लास्टिक्स एंड मेटल्स), सड़क सुरक्षा उत्पाद (डार्क आई ब्रांड) और होटल उद्योग (निर्वाण लक्जरी होटल)। आज भी परिवार नोएडा में टीवी उत्पादन यूनिट चला रहा है और विभिन्न क्षेत्रों में व्यवसाय संचालित कर रहा है। राजा सिंह का जीवन इस बात का उदाहरण है कि कैसे कठिन परिस्थितियों में भी मेहनत और दृढ़ संकल्प से सफलता हासिल की जा सकती है। एक शरणार्थी बच्चे से लेकर इलेक्ट्रॉनिक्स उद्योग के अग्रणी बनने तक, उन्होंने लाखों घरों तक सस्ती तकनीक पहुंचाई। उनकी विरासत हमेशा उन लोगों के दिलों में जीवित रहेगी, जिन्होंने उनके काम और दृष्टिकोण से प्रेरणा ली।

प्रस्तुति
स्वाति भंडारी, सीनियर कॉआर्डिनेटर,
जीआरडी एकेडमी, निरंजनपुर, देहरादून